□□□□□□□□ □□□□□□

□□□□□□□ □□□□□□
□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□,
□□.□□□.,
□□□□□□□ □□
'□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□'
(□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□-
□□□□□□
□□□□□) □□□ '□□□□ □□□□□□'
□□□□□□□□, □□□□, □□□□:
hafeezanwar@yahoo.co m

पहला प्रकाशित 1442/2023

सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस प्रकाशन का कोई भी भाग पुनः प्रस्तुत नहीं किया जा सकता या संग्रहित में ए पुनर्प्राप्ति प्रणाली, या संचारित में कोई रूप या द्वारा कोई इलेक्ट्रॉनिक या अन्य माध्यम से, बिना लिखित अनुमति के प्रकाशक.

1.महान पैगम्बर के सम्मान में ……………………..… …. 3
2.शेख अब्दुल कादर जिलानी के सम्मान में……….…....5 3.प्रस्तावना…………………………………………………. …... 13
4.शेख मोहिउद्दीन साहब की स्मृति में………………..17 5.गुलदस्त हिदायत…………………………………….. 21 6.प्रारंभिक शिक्षा……………………………………..24 7.प्रतिज्ञा का विवरण …………………………………….. 24
8.सेवा विवरण …………………………………….. 24
9.उनकी सेवा छोड़ने का ब्यौरा............................27 10.पहाड़ पर ठहरने का विवरण.................................. 28 11.खिलाफत और प्रतिज्ञा स्वीकार करने की अनुमति.....33
12. प्रारंभिक बैठकों का ब्यौरा ………………………….. 33
13.उनकी उदारता का ब्यौरा................38
14.अदृश्य स्रोत……………………………….………… 33 15.जीवनी का सारांश और वर्षगांठ का विवरण…..40 16.उनके पत्र के अंशों का विवरण…………….…..…...42

1. महान पैगम्बर मोहम्मद की
प्रशंसा में (शांति होना ऊपर
उसे)

में मदीना है कब्र का पैगम्बर, कौन दौरा किया स्वर्गदूतों द्वारा
यह है ऐसा कब्र, वहाँ है उत्कृष्टता में स्वर्ग और में आकाश

कब्र का पवित्र नबी में मदीना

है वहाँ कोई रिश्ता बीच में रेगिस्तान का मदीना साथ उद्यान?
इसलिए साथ प्यारा वायु का मदीना, यह है ईर्ष्या बगीचा का स्वर्ग

अगर मदीना शहर सुरक्षित है तो
सब कुछ सुरक्षित है
इसलिए अल्लाह रखता है यह जैसा
कारण का आशीर्वाद

हफीज क्यों? चल जतो को स्वर्ग द्वारा छोड़कर शहर का मदीना?
क्या है स्वर्ग जैसा यह है इनायत से के लिए के खातिर मदीना शहर?

अनुवादक:
मोहम्मद अब्दुल हफीज

2.हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम) की स्तुति में शेख अब्दुल क़ुदर
जिलानी आरए

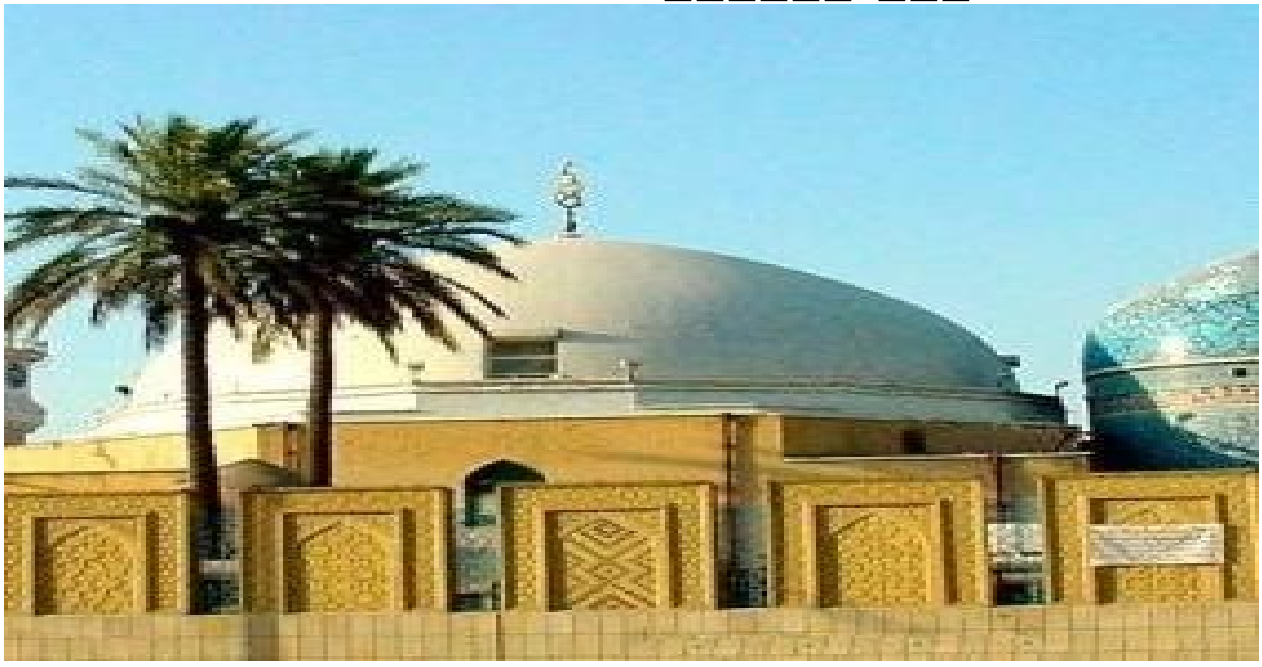

मकबरा का हजरत शेख अब्दुल क्वैडर जिलानी आरए

दुःख के सागर में नाव तुम ही हो हमारे रक्षक
आओ और नाव को लक्ष्य तक पहुँचाओ, हे शाह ग़ौस आज़म दुःख के तूफान की लहरें हर जगह से हैं
हमें ऐसी मुसीबत से जल्द बचाओ ऐ शाह ग़ौस आज़म हाफ़िज़ की ख्वाहिश है कि बगदाद में आपकी कब्र देखी जाए
अपने सबसे छोटे सेवक को बगदाद बुलाओ, ऐ ग़ौसे आज़म

मोहम्मद अब्दुल हफीज

चमत्कार हज़रत का शेख़ अब्दुल क़ुदर जिलानी (आरए)

समाधि का हजरत शेख अब्दुल क्वैडर जिलानी आरए

हज़रत शेख़ अब्दुल क्वैडर जिलानी (आरए), है नेता का सभी पवित्र व्यक्तियों पसंद नबी मुहम्मद (शांति होना ऊपर उसे।) कौन

"यदि मेरे शिष्य का छिपना खुला रहेगा और यदि वह वहाँ होगा पूर्व, और अगर मैं पूर्वाह्न में पश्चिम तब मैं इच्छा ढकना यह।"

इस प्रकार उनके शिष्य और भक्त उनकी कृपा प्राप्त करने में सफल हुए। कृपादृष्टि का चमत्कार और फ़ायदे का आध्यात्मिक पॉवर्स में सभी समय और और वे उसे अल्लाह की मदद का प्रत्यक्ष प्रमाण समझते हैं। और इसलिए, इस कारण से, वे चमत्कारों के प्रति उसके अनुग्रह को देखते हैं और उससे लाभ मिलता है। पैगम्बर का कथन है, जो इस प्रकार है इस प्रकार है।

"अगर आपका जानवर इच्छा दौड़ना दूर से आप तब आप चाहिए पुकारना जैसा ओह अल्लाह के लोग मदद करो मुझे।"

[redacted]

गुलदस्ता हिदायत

कब्र का पवित्र नबी में मदीना

द्वारा
मोहम्मद अब्दुल हफीज अमेज़न किंडल लेखक
ईमेल: hafeezanwar@yahoo.com

प्रस्तावना

इस पुस्तक में मोहम्मद जमील अहमद एम ए द्वारा लिखित पुस्तक 'गुलदस्ता हिदायत' के उर्दू संस्करण से चयनित प्रकरणों का अनुवाद मेरे द्वारा अंग्रेजी संस्करण में अनुवाद करने के बाद जोड़ा गया है और यह पुस्तक प्रसिद्ध है और यह एक प्रसिद्ध उर्दू पुस्तक है जो उपरोक्त लेखक द्वारा लिखी गई है और जिन्होंने इस पुस्तक को उर्दू भाषा में लिखा है और जिसका पहली बार अंग्रेजी भाषा में अनुवाद मेरे द्वारा किया गया है।
यह बहुत कठिन काम है, क्योंकि हज़रत न केवल हैदराबाद, भारत के क्षेत्र में अपने समय के एक महान धार्मिक व्यक्तित्व थे, बल्कि वे अपने समय के एक महान सूफी व्यक्ति भी थे। इसलिए, संक्षेप में, वे हैदराबाद क्षेत्र में अपने समय के पवित्र संतों के सर्वोच्च कैडर के नेता थे।

वह लंबे समय तक धार्मिक प्रवचनों, धर्मोपदेशों और लोगों के आध्यात्मिक प्रशिक्षण में लगे रहे और उन्होंने हैदराबाद और इस क्षेत्र के आसपास के क्षेत्र में इस्लाम के प्रचार और प्रसार कार्य के लिए कई महान प्रयास भी किए और उनके समय में ऐसा कोई व्यक्तित्व नहीं था।

वे निज़ामाबाद, कामारेड्डी, मेडक जिले और हैदराबाद के अन्य विशाल क्षेत्रों के कई आम और खास लोगों के आध्यात्मिक गुरु थे, साथ ही बड़ी संख्या में अन्य लोगों ने भी उनका अनुसरण किया और हैदराबाद में उनके शिक्षण और उपदेश मिशन पर काम किया। पुस्तक के अनुसार, इस विषय पर उनके शिक्षण और सलाह से कई हज़ार लोगों को लाभ हुआ है।

पाठकों को इस सूफी संत के बारे में सकारात्मक जानकारी और महान विवरण के कारण इस पुस्तक को पढ़ने में रुचि मिलेगी, जो, उनकी जीवनी के विवरण के अनुसार, मेडक जिले से हैदराबाद पहुंचे थे।

यह एक छोटी सी पुस्तक है जिसमें "शेख मोहिउद्दीन साहब हैदराबाद" की जीवनी भी शामिल है, और इस पुस्तक में हैदराबाद के मेडक क्षेत्र के इस महान शेख की कुछ महान उपलब्धियां हैं जो अभी तक आम जनता को ज्ञात नहीं हैं, और अन्य व्यक्तियों को बहुत ही रोचक शैली में प्रकाशित किया गया है, इसलिए, इस कारण से, पाठकों को इस मामले में बहुत रुचि और ध्यान मिलेगा।

अच्छी सरकारी नौकरी छोड़ दी, और इस पुस्तक में यह भी बताया गया है कि उन्होंने नौकरी क्यों छोड़ी, न केवल अल्लाह में अपने विश्वास के कारण बल्कि इसलिए भी कि इस प्रकरण में इस मामले से संबंधित अन्य विवरण भी शामिल हैं।

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम) की अंतिम यात्रा के बारे में अनुवादकों की टिप्पणी

हालाँकि अनुवादक उस समय शेख के शिष्य नहीं थे, लेकिन वे उनके प्रशंसक हैं और वे उस समय अपने कुछ रिश्तेदारों के साथ मौजूद थे, और उनकी मृत्यु पर बहुत दुखी थे। मैंने इस अवसर पर सभी धर्मों और विभिन्न समुदायों के लोगों की इतनी बड़ी भीड़ पहले कभी नहीं देखी, और मैंने वहाँ लोगों की इतनी बड़ी भीड़ कभी नहीं देखी।

लोगों की भीड़ इतनी थी कि लोगों की आवाजाही इतनी ज़्यादा थी कि वे किसी भी जगह पर नहीं रुके, क्योंकि कुछ समूह आते-जाते थे और दूसरे समूह शैख़ वक़ील के अंतिम संस्कार में शामिल

होने के लिए आते थे। उस समय, अंतिम संस्कार स्थल को बहुत भीड़भाड़ वाला माना जाता था, क्योंकि लोगों के आने-जाने की वजह से जगह खाली नहीं होती थी। और इसी वजह से अनुवादक ने अपने एक रिश्तेदार से पूछा, जिसने उससे पूछा, "क्या आप शैख़ वक़ील के किसी चमत्कार को जानते हैं?" "कृपया अंतिम संस्कार में भारी भीड़ और बड़ी संख्या को देखें, जो दर्शाता है कि हज़रत अपने शिष्यों, भक्तों और मेरे जैसे प्रशंसकों के बीच कितने लोकप्रिय थे," उन्होंने कहा। तो रिश्तेदार ने मुझसे कहा, "हाँ, यह सही है, और आप सही हैं; यह शैख़ वक़ील का इस मामले में अंतिम अलौकिक व्यवहार (चमत्कार) है।"

हज़रत शेख मोहिउद्दीन साहब द्वारा "मुस्लिम संत और रहस्यवादी" (फरीद अल-दीन अत्तार द्वारा तदखिरताल अलियाह) पुस्तक के लिए अपने शिष्यों को दी गई सलाह के संबंध में

यह सलाह इस मामले में सभी शिष्यों के लिए पुस्तक के दूसरे भाग में दी गई है। मुझे यह पुस्तक मेरे एक रिश्तेदार से मिली है जो शेख मोहिउद्दीन साहब के शिष्य हैं। यह पुस्तक 800 साल पहले खाजा फरीद एल्डिन अत्तार ने फारसी में लिखी थी, इसे विरासत का दर्जा प्राप्त है, और इसे लंबे समय तक बगदाद के निजामिया विश्वविद्यालय में पढ़ाया गया था।

इस पुस्तक में 96 अध्याय उपलब्ध हैं। और अंग्रेजी अनुवाद में पुस्तक के दो भाग मिलते हैं, और पुस्तक का एक भाग इस पुस्तक के अनुवादक द्वारा अनुवादित किया गया है।

4.शेख मोहिउद्दीन साहब हैदराबाद के सम्मान में

ओह शाह मोही आप प्रसिद्ध शेखों में से एक हैं आपका स्थान सभी पवित्र व्यक्तियों में उच्च है

आपका दर्जा महान है क्योंकि आपने इस्लाम के लिए काम किया है

अमेज़न किंडल लेखक

गुलदस्ता हिदायत

हज़रत शेख मोहिउद्दीन साहब की स्मृति में

यदि आपने कभी पीरान के शाह के बारे में सुना है,
तो क्या आप पीरान के शाह की बदौलत काम करवा सकते हैं?
हे पीराँ के शाह, हम आपका नाम श्रद्धापूर्वक जपते हैं।
तो हमारे दिलों को राहत मिलेगी, हे पीरान के शाह!
दो दुनियाओं, मस्जिद या किसी अन्य चीज़ की कोई परवाह नहीं
ऐ पीरान के शाह, इंसान का काम अल्लाह ही करेगा।
और कोई भी उसके लिए दुनिया की इच्छाओं की परवाह नहीं करता।
ओह, शाह पीराँ, आपने मुझे ऐसा पेय पिलाया है।

अब मुसीबत के समय में हफीज संतुष्ट है, इसमें कोई संदेह नहीं कि पीरान के शाह प्रसन्न होंगे।

मोहम्मद अब्दुल हफीज

गुलदस्ता हिदायत

मूल स्थान और पारिवारिक विवरण: येल्दुर्टी मेडक जिले का एक गाँव है जो चारों तरफ से जंगलों, झरनों और नदियों से घिरा हुआ है। पिछले 25 सालों से पहले, यहाँ कोई स्थायी सड़क और पुल नहीं थे, और परिणामस्वरूप, येल्दुर्टी आने-जाने में बहुत सी कठिनाइयाँ होती थीं, खासकर बरसात के मौसम में, जब यह क्षेत्र नदियों और झरनों से घिरा होता था और एक द्वीप बन जाता था, जिससे इस सुदूर स्थान पर आने-जाने वाले पर्यटकों और यात्रियों का आना-जाना बंद हो जाता था।

हालांकि, स्थायी सड़कों और पुलों के निर्माण के कारण, इस क्षेत्र में पहले की समस्याएं अब नहीं रहीं। अब यल्दुर्ती से मेडक, तोपरन और नरसापुर तक स्थायी सड़कें हैं। परिणामस्वरूप, वहां से बसें, ट्रक और परिवहन के अन्य साधन उपलब्ध हैं।

मेडक से जोगीपेट के रास्ते में मंजरा नदी के पास सड़क के किनारे एक गांव है जो चिटकल गांव के नाम से मशहूर है और कहा जाता है कि हजरत शेख मोहिउद्दीन साहब के पूर्वज जो चिटकल गांव से यल्दुर्ती में आकर बस गए थे, वे यहीं पर स्थायी रूप से आकर बस गए थे। और इसी वजह से उनका परिवार चिटकल परिवार के नाम से मशहूर हुआ। समय के शेख एक जाने-माने और सम्मानित परिवार के सदस्य हैं। उनके पिता का नाम मोहम्मद कासिम साहब है, उनकी मां का नाम अमाना बी साहिबा है और उनके पिता चिटकल कासिम साहब के नाम से मशहूर थे। उनका पेशा आबकारी और वन विभाग के ठेकेदार का था। वे खेती-किसानी के काम में भी शामिल थे और गांव में उनका एक स्थायी घर था, जो बंगले जैसा था और जो आज भी सड़क के किनारे सम्मानजनक तरीके से खड़ा है।

समय के शेख का जन्म 25 अगस्त 1916 को, जो 25 शव्वाल, 1334 हिजरी के अनुसार शुक्रवार के दिन, हज़रत आमना बी साहिबा के घर से, चिटकल

मोहिउद्दीन था, जिनकी बचपन में ही मृत्यु हो गई थी।

लड़कियों में पहली लड़की का नाम मालन बी साहिबा, दूसरी लड़की का नाम राबिया बी साहिबा और तीसरी लड़की का नाम हाफ़िज़ा बी साहिबा है। इन तीन भाइयों और तीन बहनों की शादी जब शादी की उम्र में हुई तो उनकी शादी हो गई और वे सभी अपने बच्चों और अपने परिवारों के साथ अपने-अपने घर में बस गए।

हज़रत अपने परिवार के सभी सदस्यों और अपने पिता से बिलकुल अलग थे। उनकी सोच और उनके परिवार के अन्य सदस्यों की सोच में काफ़ी अंतर था। उनका स्वभाव यथार्थ जैसा ही था, जैसा कि इस मामले में उनका रिवाज़ था। उन्हें इस क्षेत्र में हर चीज़ के लिए सबक लेने की आदत थी। यहाँ तक कि रंग-बिरंगी दुनिया और उसके आकर्षण में रहते हुए भी वे हमेशा दुनिया की नश्वरता और सहनीय जीवन के बारे में सोचते रहते थे, जिसमें उनकी ज़्यादा दिलचस्पी नहीं थी।

6. शिक्षा: बचपन में उनकी प्रारंभिक शिक्षा उनके पैतृक स्थान येलदुर्टी गांव में पूरी हुई। और यहां से पढ़ाई पूरी करने के बाद वे आगे की शिक्षा के लिए हैदराबाद चले गए। वर्ष 1932 में उन्हें हैदराबाद के दारुल-उलूम स्कूल में भर्ती कराया गया और उन्होंने

सातवीं कक्षा तक अपनी शिक्षा पूरी की। लंबे इंतजार के बाद 1941 में पंजाब मुंशी कोर्स के लिए उन्हें हैदराबाद के न्यू आजमपुरा में हमीदिया संस्थान में भर्ती कराया गया और उन्होंने दिल्ली केंद्र से परीक्षा दी और पंजाब मुंशी की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की, उर्दू, अरबी और फारसी भाषाओं में निपुणता प्राप्त की, साथ ही अंग्रेजी और तेलुगु का भी ज्ञान प्राप्त किया।

7. प्रतिज्ञा: 8 जनवरी 1939 को हजरत सैयद शाह अब्दुल कादिर साहब दरवेश कादरी चिश्ती, जो बीजापुर के रहने वाले थे और उस समय हजरत बंदा नवाज गुलबेरा के दरगाह क्षेत्र गुलबर्गा में रहते थे, के हाथों में हजरत की प्रतिज्ञा हुई और वे रहस्यवाद की स्थिति में रहने लगे।

8. आर्थिक और रोज़गार के मामलों में संलग्नता: वर्ष 1935 में, उन्हें अस्थायी आधार पर कामारेड्डी में भूमि अभिलेख विभाग में सेवा में शामिल किया गया था, और उन्होंने अपने कर्तव्यों का पालन किया और बाद में, वर्ष 1936 में, जब उनके पिता एक आबकारी और वन ठेकेदार के रूप में काम करते थे, तो वे उनके साथ काम करने लगे। उन्हें गुलेबर्गा में सुबादारी कार्यालय में राजस्व विभाग में अस्थायी रूप से नियुक्त किया गया और दिसंबर

1941 में मुंशी की परीक्षा पास करने के बाद, 7 अक्टूबर 1943 को उन्हें उसी विभाग में एक स्थायी क्लर्क के रूप में नियुक्त किया गया। भ्रष्टाचार के कारण उनसे बहुत नफरत की जाती थी। हज़रत ने अपनी छह साल की सेवा के दौरान, अपना जीवन न्यायपूर्ण साधनों के माध्यम से आजीविका कमाने में बिताया, जिसका अर्थ है कि उन्होंने अपने जीवन का खर्च केवल अपने वेतन की राशि पर ही चलाया और इस मामले में भी उन्होंने यही तरीका अपनाया।

20 अप्रैल 1947 को उनका तबादला सूबेदारी गुलबर्गा से सूबेदारी मेडक में कर दिया गया, जिसका मुख्यालय हैदराबाद में था और हैदराबाद में कुछ महीने काम करने के बाद उन्होंने हैदराबाद की नौकरी छोड़ दी।

उनके वैवाहिक जीवन का विवरण: सन् 1936 में 20 वर्ष की आयु में उन्होंने अपने सगे चाचा अब्दुल सत्तार की पुत्री मोहम्मद बी से विवाह किया, जो मसाईपेट में रहती थी और डेढ़ वर्ष के वैवाहिक जीवन के पश्चात उनके यहां एक पुत्र का जन्म हुआ; यह पुत्र अभी दो महीने का भी नहीं हुआ था कि उनकी मां का देहांत हो गया और हजरत की मां ने अपने पोते के पालन-पोषण और पालन-पोषण की जिम्मेदारी उठानी शुरू कर दी और उस लड़के का नाम अकरमुद्दीन था, जो

इस समय अपने पैतृक शहर यल्दुर्ती में परिवार के सदस्यों के साथ था।

हज़रत का दूसरा विवाह चिगुंटा निवासी एक कस्टम कर्मचारी मौलवी गुलाम रसूल की पुत्री से हुआ, जिनका नाम मुन्नी बी साहिबा था, और यह विवाह काल भी संक्षिप्त था। और इस एक वर्ष के विवाह काल में एक लड़का पैदा हुआ, और दूध पिलाते समय लड़का और उसकी माँ दोनों की मृत्यु हो गई।

तीसरा विवाह उन्होंने टोपरान गांव के निवासी मौलवी मकबूल अहमद की पुत्री से किया, जो राजा धर्म करण बहादुर की जागीर के अधीक्षक थे और जिनका नाम कुबरा बी साहिबा था और जो अब हमारी पीरानी मां साहिबा (आध्यात्मिक गुरु की पत्नी) हैं। 25 अगस्त 1942 को जो 26 रजब हिजरी सन् 1361 को सोमवार के दिन पड़ता है। उनके शरीर से चार लड़के और एक लड़की पैदा हुए और कुल मिलाकर पांच बच्चे हुए, जिनका विवरण इस प्रकार है:

1.ताहेर मोहिउद्दीन 2.अहमद मोहिउद्दीन 3.गुलाम मोहिउद्दीन 4.मोहम्मद फखरुद्दीन 5.फातिमा बी.

पहले तीन पुत्रों की मृत्यु हो गई, जिसका विवरण इस प्रकार है।

ताहिर मोहिउद्दीन का जन्म चार वर्ष की आयु में, अहमद मोहिउद्दीन का जन्म डेढ़ वर्ष की आयु में, तथा गुलाम मोहिउद्दीन का जन्म चार महीने की आयु में हुआ था।

उनमें से भाग्य के पुत्र मोहम्मद फखरुद्दीन साहिब और उनकी धर्मपरायण बेटी फातिमा बी साहिबा अभी भी जीवित हैं और उनकी जीवनी का विवरण इस प्रकार है:

आदरणीय मोहम्मद फखरुद्दीन साहब का जन्म 13 जून 1951 को टोपरान गांव में, 7 रमदान हिजरी सन् 1370, बुधवार को अपने चाचा गुलाम मोहिउद्दीन साहब के घर में हुआ

और बेटी
फातिमा बी साहिबा का जन्म 19 जून 1963 को 26 मुहर्रम हिजरी सन् 1383, बुधवार को हैदराबाद के लाल दरवाजा मोहल्ले में मुनीर उद्दीन साहब की पत्नी वहीदा बी साहिबा के घर में हुआ और हजरत के इन दोनों बेटे और बेटी का पालन-पोषण बेहतर तरीके से हुआ।

बेटे मोहम्मद फखरुद्दीन साहब ने 21 दिसंबर 1973 को महमूदा बेगम से शादी की और दंपत्ति के निम्नलिखित बच्चे हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है:

1.अमजद मोहिउद्दीन 2.तस्नीम कौसर 3.अरशद मोहिउद्दीन,

19 मार्च 1978 को हज़रत की बेटी फातिमा बी साहिबा का निकाह अब्दुल वाहिद साहब (अशरफ) के साथ हुआ और उनकी संतानें इस प्रकार हैं:

1. मोहम्मद अनवर हुसैन 2.मेराज फातिमा 3. मोहम्मद मुनवर हुसैन.

हज़रत और उनकी पत्नी रैन बाज़ार स्थित अपने मकान में रहते हैं, और उनके बेटे फ़ख़रुद्दीन साहब अपने परिवार के साथ मोइन बाग़ इलाके में रहते हैं। और उनकी बेटी फ़ातिमा बी साहिबा अपने परिवार के साथ मोइन बाग़ में अपने मकान में रहती हैं, जो कि नज़दीक है। अपने भाई फकरुद्दीन साहब के घर।

मोइन बाग मोहल्ले में हज़रत के बहुत से मुरीद और मुरीद रहते हैं, इसलिए हज़रत अपनी औलाद से मिलने और अपने दोस्तों से मिलने के लिए रैन बाज़ार से मोइन बाग़ आते थे। अन्य रिश्तेदार, शिष्य और भक्त।

9. नौकरी छोड़कर अल्लाह पर भरोसा रखना

अक्टूबर 1947 में हज़रत ने अपनी नौकरी छोड़ दी, ताकि इस मामले में अल्लाह की इबादत पर पूरा ध्यान और पूर्णता से ध्यान दे सकें। उन दिनों उनकी सोच में काफ़ी बदलाव आए। हालाँकि उनके पिता उनसे कहते थे कि नौकरी में शामिल हो जाओ और नौकरी मत छोड़ो, लेकिन इस मामले

[illegible]

[illegible]

[illegible]

□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□) □□□□ (*□□□□* , *□□□□□* , □□ *□□□□□* (□□□□ : سحور , □□□□□□□ : *□□□□□* , '□□□ □□', '□□□ □□ □□□□ □□ □□□□'), □□□□ □□□□ , □□□□ , □□ □□□□□ (□□□□□□ / □□□□□ : سحور) □□ □□□ □□□□ □□, □□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ (□□□) □□ □□□□, □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□) □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□, □□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□-□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□

10. □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□

11 □□□□□ 1951 □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□-□□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□

□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□, □□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□, □□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□, □□□ □□ □□□□□

11. खिलाफत और प्रतिज्ञा की अनुमति

27 जून 1956 को, जब हज़रत की आयु 40 वर्ष थी, जो कि 17 ज़ीक़ाद वर्ष 1375 हिजरी के अनुसार थी, हज़रत शाह अब्दुल क़ादिर दरवेश क़ादरी हज़रत बंदा नवाज़ के वार्षिक उर्स समारोह के दौरान गुलबर्गा में थे, जब क़ादरिया और चिश्ती के सूफी सिलसिले में उन्हें ख़िलाफ़त और प्रतिज्ञा की अनुमति दी गई थी । और उन्हें ऊपर वर्णित दो जंजीरों में शिष्यों द्वारा प्रतिज्ञा स्वीकार करने की अनुमति दी गई थी। लेकिन, ख़िलाफ़त प्राप्त करने और अपनी ईमानदारी के परिणामस्वरूप पूर्णता प्राप्त करने के बाद, हज़रत ने अनिच्छा से शिष्यों से प्रतिज्ञा स्वीकार कर ली।

हज़रत की खिलाफत की खबर पाकर हक़ीकत के शागिर्द आपके हुज़ूर में आए और उनसे दरख़्वास्त की कि आप उनका अहद क़बूल करें, लेकिन उन्हें इस मामले में मायूसी ही हाथ

लगी। इस तरह दिन गुज़रते रहे। आख़िरकार इस मामले में अल्लाह की रहमत से जज़्बा पैदा हुआ। 19 सितंबर 1956 को बुधवार के दिन दोपहर के बाद यल्दुर्ती गांव में हुक्म ए इलाही पर शागिर्दों में अहद का काम शुरू हुआ। इस वजह से बड़ी तादाद में और बड़ी भीड़ के साथ लोग आपके हुज़ूर में आए और आपके हाथों पर अहद किया। और यह काम अभी भी जारी है और उम्मीद है कि अल्लाह के बंदों को इस काम से फ़ायदा मिलेगा।

12.शीघ्र बैठकों की स्थिति

इस आरंभिक काल में बैठक का ढंग और परिवेश भिन्न था। दिन-रात लगातार बैठकें होती थीं। बैठक ईसा की नमाज़ के बाद शुरू होती थी और फ़ज्र की नमाज़ के साथ समाप्त होती थी। इसमें इतनी दिलचस्पी और ध्यान होता था कि रात बीत जाती थी, लेकिन इस मामले से जुड़े लोगों को इसका अहसास नहीं होता था। और दिन में रोज़ा खोलने के बाद यह शुरू होती थी, शाम के खाने के समय तक यह समाप्त हो जाती थी और

स्नान करते हैं, जल स्रोत से बाहर निकलते हैं, और अपने निवास पर लौटने से पहले शरीर पर सूखे और धुले हुए कपड़े पहनते हैं।

व्यक्तित्व: उनके आचरण और आदतों का विवरण इस प्रकार है:

सभी को इसका महत्व बताने के लिए
लोग वर्षों से इस पर बहस करते रहे हैं।

हज़रत का चेहरा चमकीला था और वह जितने आकर्षक और विचित्र थे, लंबे, सुडौल, चुस्त शरीर, सेहतमंद, साफ दिल, अच्छे स्वभाव, ईमानदार, साफ शरीर वाले, चाहे वह यात्रा करते रहे या ठहरे, पूरी जिंदगी में सादगी की झलक मिलती थी। और इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति के व्यक्तित्व में बहुत आकर्षण पैदा हो जाएगा। और अगर वह इस मामले में उनसे मिलना बंद नहीं करता है तो उसका दिल इस मामले में संतुष्ट नहीं होगा।

अगर वह चलेंगे तो उनके अनुयायियों को इस मामले में दौड़ना ज़रूरी होगा। जब वह बात करेंगे तो ऐसी बातचीत होगी कि ऐसा लगेगा कि उनकी ज़बान से फूलों की तरह शब्द निकल रहे हैं। जब कोई मीठी बात होगी तो कठिन बातचीत भी उनकी ज़बान से उतर जाएगी। और उनकी मौजूदगी

कोई भी इस मामले में उनके रहस्यों को जान सकता था।

फ़ज्र की नमाज़ के बाद हज़रत ड्राइंग रूम में प्रवेश करेंगे, जहाँ आने-जाने वाले उन्हें देख सकेंगे। हज़रत निजी मामलों पर अच्छी सलाह देंगे। जीवन की वास्तविकताओं के साथ-साथ जीवन के विभिन्न पहलुओं के रहस्यों पर चर्चा होगी। हुक्म की अवहेलना करने पर उनका गुस्सा हावी होगा और अगर अल्लाह के हुक्म का पालन किया जाए तो इस मामले में उनकी छाया होगी। हज़रत को दिखावे और प्रदर्शन के मामले पसंद नहीं थे। जैसा कि उर्दू भाषा में निम्नलिखित दोहे में कहा गया है, इसका अनुवाद और व्याख्या इस प्रकार है:

अपने चेहरे के सामने एक दीपक रखकर और यह कहते हुए
जाँच करके देखें कि पतंगा यहाँ से चला जाता है या आता है।

आधी सदी से भी अधिक समय से उनके आमंत्रण के जीवन का सार आत्म-ज्ञान और आत्म-शुद्धि है। और यही वास्तविकता का विषय है। और वास्तविकता के इस आमंत्रण की शैली का उल्लेख यहां किया गया है और जो निम्नलिखित तरीके से होगा।

"वफादार फूल को कठिनाइयां होती हैं, लेकिन वह हरम से प्यार करता है।"

13. उदारता: इस मामले में, निस्वार्थता और त्याग और उदारता और इसके लिए वह दौड़ने का आदर्श थे। और उनका व्यक्तित्व गुणों से भरा था, और अपने जीवन के आरंभ से ही, ऐसा हुआ है कि हज़रत अपने वेतन की कुछ राशि दान-पुण्य के लिए बचा कर रखते थे। और उनकी कमाई का बाकी हिस्सा उनके निजी खर्चों को पूरा करने के लिए इस्तेमाल होता था। नतीजतन, जब उन्हें अपनी नौकरी के आरंभ से ही वेतन मिलता था, तो वह उसमें से कुछ राशि अलग करके उसे बदल देते थे और फिर अपने घर लौटने से पहले गरीबों में दान-पुण्य के रूप में बांट देते थे।

हज़रत के यहाँ आज भी यह प्रथा है, जो न केवल पाई जाती है बल्कि दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है, तथा आज तक किसी भी फ़कीर को ऐसा नहीं देखा गया कि वह अपने घर से खाली हाथ लौटा हो। हज़रत यदि अत्यंत व्यस्त भी हों, तो भी वे इस विषय में फ़कीर की पुकार पर ध्यान देते हैं तथा उसकी मुराद पूरी होने पर पुकारने वाले को अपने घर से लौटा देते हैं।

इसके बावजूद हज़रत उन जरूरतमंद लोगों की आर्थिक मदद करते थे जो उनके सामने हाथ फैलाकर मदद नहीं मांगते थे।

ऐसे हजारों जरूरतमंद लोग हैं जो निकट और दूर के इलाकों से हैं और जो इस मामले में हजरत की उदारता से लाभान्वित हुए हैं और उनके दान कार्य का दायरा बहुत व्यापक है। वह डाक मनीऑर्डर प्रणाली का उपयोग करके दूरदराज के इलाकों में रहने वाले लोगों को वित्तीय सहायता भेजते थे। नतीजतन, हर महीने कई हजार रुपये दान और भिक्षा पर खर्च किए जाते थे।

जरूरतमंदों और गरीबों को आर्थिक मदद देने के साथ-साथ बैठकों और भोजन और पीने का प्रबंध करने से हज़रत के नेतृत्व में हक़ के छात्रों को ज्ञान के साथ-साथ उनके सीने से भी लाभ मिलता है। ज्ञान और वित्त की ऐसी उदारता, और इसका सारा श्रेय इस मामले में समय के शेख को जाता है।

अपनी आत्मा देने से पहले अल्लाह को पहचानो अगर तुम दान का शौक़ रखना चाहते हो, ऐ तस्लीम,

14.अदृश्य स्रोत: कुछ दिनों के बाद जब हज़रत ने नौकरी छोड़ी और वे अपने पिता के सामने थे और कुछ अन्य लोग भी वहाँ मौजूद थे। उनमें से एक ने हज़रत के पिता को बताया, "इस व्यक्ति ने नौकरी छोड़ दी है।" "तुमने नौकरी से इस्तीफा दे दिया है और तुम क्यों नौकरी छोड़ रहे हो?" उनके पिता ने उनसे पूछा। कई

बार पूछने पर हज़रत ने इस विषय में कोई उत्तर नहीं दिया और वे चुपचाप बैठे रहे।

कुछ समय बाद उसके पिता ने उसे बताया कि इस रास्ते पर कुछ लोग कीमिया सीखते थे, बेस मेटल को सोने में बदलते थे और उससे सोना बनाते थे, और उस सोने को बेचकर अपना खर्च चलाते थे। इस मामले में वे अपना जीवन शांति, अनुरूपता, रहस्यवादी तरीके और गुलामी में बिताते थे। और कुछ लोगों के पास एक अदृश्य स्रोत होता है, जिससे उन्हें हर दिन बिना चूके एक निश्चित राशि मिलती है। और इस तरह वे अपने जीवन के दैनिक खर्च पूरे करते हैं। और इस तरह वे अल्लाह की गुलामी में शांति और आराम से अपना जीवन जीते हैं।

जब हज़रत के पिता ने यह सुना तो उन्होंने पूछा, "क्या तुम्हारे पास कोई अदृश्यता का स्रोत है?" यह सुनकर हज़रत ने कहा, "हाँ, मेरे पास था।" अदृश्य स्रोत के स्पष्टीकरण के लिए उन्होंने ऊँची आवाज़ में निम्नलिखित दोहे पढ़े हैं:

कई लोग हाथ उठाने की गलती करते हैं।
यदि उनके पास ऐसा नहीं है, तो उनके पास एक अदृश्य स्रोत है।

जब उनके पिता को इस बात का पता चला तो वे बहुत खुश हुए और उनकी प्रशंसा करते हुए उन्हें गले लगाया और कहा, "यह एक ऐसा दर्जा है जो बहुत कम लोगों को मिलेगा।"

वास्तविकता को शब्दों में बयां करना कठिन है।
लेकिन वास्तविकता तो बातों के रंग में ही छिपी होती है।
दीपक की आत्मा छाती में चमकती है।
लेकिन सारी बातें यही बताती हैं कि यह पर्याप्त है।

15.जीवनी सारांश, वर्षगांठ, और अंतिम विश्राम स्थल का विवरण।

23 अगस्त 1916 को, हजरत शेख मोहिउद्दीन मीरान चिश्ती कादरी का जन्म मेडक जिले के येलदुरती में एक धनी परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम मोहम्मद कासिम और उनकी माता का नाम अमाना है। प्रारंभिक शिक्षा उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गांव के स्कूल में पूरी की और फिर हैदराबाद के दारुल

उलूम हाई स्कूल में अपनी पढ़ाई जारी रखी, जहाँ उन्होंने सातवीं कक्षा तक पढ़ाई की।

फिर उन्होंने वर्ष 1941 में दिल्ली सेंटर से पंजाब मुंशी की परीक्षा प्रथम श्रेणी में डिस्टिंक्शन के साथ पास की। जीवन के पहले 25 वर्षों में वे असाधारण त्रासदियों से गुज़रे। वर्ष 1936-1939 के दौरान उनकी दो शादियाँ हुईं, लेकिन इस छोटी सी अवधि के दौरान उनकी दोनों पत्नियों की मृत्यु हो गई। उक्त अवधि के दौरान, उन्होंने अचानक अपना घर छोड़ दिया और गुलबर्गा शहर की यात्रा की, जहाँ उन्होंने उस समय के पवित्र व्यक्तित्व हज़रत शाह अब्दुल क़ादिर चिश्ती क़ादिर बीजापुरी से मुलाकात की और उनसे अपनी प्रतिज्ञा की, इसलिए उक्त शेख़ गुलबर्गा में उनके आध्यात्मिक गुरु बन गए, और बाद में वे अपने आध्यात्मिक गुरु की अनुमति प्राप्त करने के बाद अपने मूल स्थान पर वापस आ रहे थे। वह
अपना सारा समय पूजा और रहस्यमय अभ्यास में बिताने के आदी थे, और इस दौरान उनकी तीसरी शादी हुई। वर्ष 1943 में उन्हें गुलबर्गा में सूबेदारी (राज्यपाल) कार्यालय में क्लर्क के पद पर नियुक्त किया गया, जहाँ से उन्हें वर्ष 1947 में हैदराबाद में मुख्यालय के साथ मेडक सूबेदारी कार्यालय में स्थानांतरित कर दिया गया, लेकिन

शिष्य और भक्त उनकी शिक्षाओं और इस्लामी धर्म के प्रचार से प्रभावित हुए थे। उन्होंने 19 रबी थानी वर्ष 1934 हिजरी को 97 वर्ष की आयु में सुबह (फज्र) की नमाज के समय बीमारी के एक छोटे से दौर के दौरान अपनी बेटी के घर पर इस नश्वर दुनिया को छोड़ दिया। उन्हें हैदराबाद के बुंडलगुडा स्ट्रीट में जेनाब मस्जिद के पास दफनाया गया।
-- ---------------------------

16. भाग दो

उनके पत्रों का अंश

1. अल्लाह की ओर झुकना सरल है, परन्तु उस पर स्थिर रहना कठिन है।

उन्होंने विद्यार्थियों को इस बात की सलाह दी है कि यह वास्तव में "अल्लाह की ओर झुकना" का मामला है - एक सौभाग्यपूर्ण मामला। हालाँकि, इस मामले में एक शर्त यह है कि अल्लाह की ओर झुकना एक आसान बात है, लेकिन इस पैटर्न को हमेशा के लिए बनाए रखना मुश्किल है, जो इस मामले में पूर्णता की बात है।

मनुष्य को प्रत्येक कदम पर गुमराह करने वाली शैतानी आशंकाओं और भ्रामक मानवजाति के कारण, ऐसी सभी समस्याओं से दूर रहना, जो

वास्तविकता को इस प्रकार समझे बिना संभव नहीं है ।

अतः यदि साधु-पुरुषों की संगति की जाए तथा साधु-पुरुषों की जीवनी-पुस्तकों का गहन अध्ययन किया जाए तो इस मार्ग पर दृढ़ होना संभव है।

2. प्रतिदिन पवित्र लोगों की परिस्थितियों को पढ़ना

उन्होंने विद्यार्थियों को यह सलाह दी है कि जीवन का उद्देश्य सिर्फ़ अल्लाह की सेवा करना ही काफ़ी है। इसका मतलब है कि हम अपना जीवन अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञाकारिता में बिताएँ। और इसी कारण से तदकिरताल औलिया की किताब पढ़ना ज़रूरी है। कम से कम किसी पवित्र व्यक्ति की किताबों के कुछ पन्ने उनके हालातों के बारे में पढ़िए, तो इससे प्रेम बढ़ेगा, ईमान बढ़ेगा और दृढ़ता के विचार की सोच आएगी। संक्षेप में, इसके हज़ार फ़ायदे हो सकते हैं। अगर आप पढ़ नहीं सकते, तो पाठक के साथ बैठकर सुनें, जो कि

ज़रूरी है, और इससे हज़ार फ़ायदे हो सकते हैं। अल्लाह हम सभी को मार्गदर्शन प्रदान करे। (आमीन)

3. गुलामी में लिप्त रहना और अल्लाह की इच्छा के आगे समर्पण कर देना

उन्होंने विद्यार्थियों को इस तरह से सलाह दी है कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि अगर कोई व्यक्ति अल्लाह की गुलामी में अपनी जिंदगी गुजारता है और अल्लाह से प्रार्थना करता है, तो उसकी प्रार्थना अल्लाह के दरबार में बिना किसी संदेह के स्वीकार की जाएगी। उस पर रहमत बरसेगी। हमें समझ में आ गया है कि चीजें हमारी इच्छाओं और इच्छाओं के अनुसार नहीं हो रही हैं। इसलिए अल्लाह हमारी प्रार्थनाओं को स्वीकार नहीं कर रहा है, और वह व्यक्ति एक अंधे व्यक्ति की तरह है।

उनमें प्रार्थना की स्वीकृति को समझने की दृष्टि का अभाव था। लेकिन मनुष्य के लिए, प्रार्थना आवश्यक है और इस कारण से अल्लाह द्वारा स्वीकार की जाएगी, और गुलामी के लिए और साथ ही अल्लाह की इच्छा के लिए समर्पित स्थिति में रहने की सलाह है। अल्लाह हम सभी को कृतज्ञता प्रदान करे (आमीन)।

4.सफलता का रहस्य

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह देते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा है कि मनुष्य की भलाई का रहस्य उसकी गुलामी में ही छिपा है। हालांकि, गुलामी में धैर्य और दृढ़ता की शर्त होती है और इनके बिना गुलामी इस मामले में विफल हो जाएगी।

इसलिए हर हालत में, चाहे मुश्किल हो या आराम, इंसान को अपने गुलामी के काम में लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए। अल्लाह हम सबको लापरवाही से बचाए। (आमीन)

5. पवित्र लोगों की परिस्थितियाँ व्यावहारिक क़ुरानी कर्म हैं।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी है कि अल्लाह के मार्ग पर धैर्य और दृढ़ता की आवश्यकता है, और इसका एक उच्चतर स्रोत है, जो पवित्र लोगों की जीवनियों का अध्ययन है। अल्लाह के पवित्र व्यक्तियों की परिस्थितियों को पढ़ना और सुनना उत्कृष्ट सलाह और उपदेश है। आगे कहते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह कार्य भाग्यशाली और धार्मिक व्यक्तियों का है।

पवित्र लोगों की परिस्थितियाँ व्यावहारिक पवित्र ग्रंथों के अनुरूप हैं। इन पुस्तकों का अध्ययन करने के परिणामस्वरूप विश्वास और प्रेम में वृद्धि होगी।

तब हममें संसार के भ्रामक व्यापारिक व्यवहारों के प्रति अरुचि विकसित हो जाएगी, तथा मार्गदर्शन के सही मार्ग पर चलने के प्रति हमारा लगाव बढ़ जाएगा।

संक्षेप में कहें तो इसके हज़ार फ़ायदे हो सकते हैं। इसलिए किताबों का अध्ययन करना चाहिए, भले ही यह पढ़ने की थोड़ी मात्रा ही क्यों न हो, लेकिन रोज़ाना पढ़ना जारी रखें। अल्लाह हमें अच्छी हालत में रखे। (आमीन)

6.रहस्यमय मार्ग और उसकी गति

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि बीच-बीच में रास्ते में गति न बढ़ाएं और गलत दिशा में न चलें, बल्कि दृढ़ता बनाए रखें, इसी पैटर्न पर चलते हुए गंतव्य तक पहुंचें।तेजी से चलना और फिर रुक जाना धोखा है।

अल्लाह मालिक है, और यह प्रार्थना की जाती है कि अल्लाह हम सभी को पवित्र मार्गदर्शन में रखे और अल्लाह हमें धीरे-धीरे हमारी मंजिल तक पहुंचाए। (आमीन)

7.अल्लाह तो बस एक मददगार है

उन्होंने छात्रों को सलाह देते हुए कहा, "भाई, देखो चाहे लाख मुश्किलें हों, लेकिन अल्लाह और उसके नबी की गुलामी से लापरवाही नहीं होनी चाहिए।"

अल्लाह और उसके नबी की इताअत का मतलब यह है कि यह दोनों जहानों में कामयाबी का एक उच्च दर्जे का ज़रिया है। इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह और उसके नबी सच्चे मददगार हैं, लेकिन अल्लाह और उसके नबी बिलकुल बेकार हैं। अल्लाह हमें हिदायत दे कि हम उसकी गुलामी में एक पल के लिए भी लापरवाह न हों। (आमीन)

और हर मामले में और हर काम में हमें सिर्फ़ अल्लाह पर पूरा भरोसा और विश्वास रखना चाहिए। अगर हम स्रोतों पर भरोसा करेंगे, तो वे हमें निराश कर देंगे। ईश्वर महान है, और अल्लाह कारणों का कारण है। "मुस्लिम संतों और रहस्यवादियों (शेख फ़रीद एल्दिन अत्तार की तदकिरातल औलिया)" के बारे में किताबें पढ़ने से हमें अपनी सभी कठिनाइयों और समस्याओं में मदद मिलेगी। इससे हमारा विश्वास बढ़ेगा, और हम हिम्मत पा सकेंगे। इसलिए शेख फ़रीद एल्दिन अत्तार की किताब तदकिरातल औलिया का अध्ययन न छोड़ें।

8. संत पुरुषों की संगति सबसे उत्तम और श्रेष्ठ है।

उन्होंने छात्र को सलाह दी कि पवित्र लोगों की बातचीत और उनकी संगति सबसे अच्छी है, और वह सही थे। अल्लाह हमें दिन-रात पापों से दूर रखे और हमें पवित्र लोगों के हालात का अध्ययन करने की बुद्धि प्रदान करे। (आमीन)

9. ईश्वर के स्मरण का महत्व

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी है कि, "भाइयों, हमारा उद्देश्य अल्लाह की याद में लगना और नबी की राह पर चलना है, इसलिए हमें गुनाहों से दूर रहकर अल्लाह की याद में दिन-रात लगे रहना चाहिए। हमें बैठते, खड़े होते या चलते समय अल्लाह की याद को कभी नहीं भूलना चाहिए। बल्कि हर काम करके हम अल्लाह की याद में लग सकते हैं। ज़िकर (अल्लाह की याद) आखिर है क्या? यह हमारा व्यापार है। ज़िकर (अल्लाह की याद) क्या है? यह दूसरी दुनिया की यात्रा का प्रावधान है। नतीजतन, हमें अल्लाह की याद में कभी लापरवाही नहीं करनी चाहिए। अल्लाह हमें अच्छा बनाए रखे। (आमीन)

10.अल्लाह उन लोगों की सराहना करता है जो आज्ञाकारिता को महत्व देते हैं

उन्होंने छात्रों को सलाह दी है कि "उन्हें उनके पोस्टकार्ड ठीक से मिले हैं, और यह केवल आपके प्रेम का प्रमाण है, साथ ही अल्लाह और उसके रसूल के साथ आपके संबंध का भी प्रमाण है।" निस्संदेह, अल्लाह उन लोगों का पक्ष लेता है जो आज्ञाकारिता की सराहना करते हैं और उस पर विचार करते हैं।

हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य अल्लाह की सेवा करना है। जो लोग गुलामी से ऊपर उठते हैं, वे निस्संदेह भाग्यशाली और सौभाग्यशाली लोग हैं। अल्लाह उन्हें सही रास्ते पर धैर्य और दृढ़ता प्रदान करे। (आमीन) यह हम सभी के लिए सबसे अच्छी प्रार्थना है।

11. गुलामी और जीवन

उन्होंने छात्रों को सलाह दी है कि हमारी जिंदगी का आधार और भरोसा सिर्फ गुलामी पर है। जो लोग अल्लाह के बंदे नहीं हैं, वे भी खारिज हैं। अल्लाह हमें लापरवाही से बचाए, खुशहाली के हालात में रखे और हमें जिंदगी का मकसद अता फरमाए। (आमीन)

12. गुलामी क्या है?

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी है कि "निःसंदेह वे लोग भाग्यशाली और सफल हैं जो

गुलामी करते हैं।" गुलामी क्या है? उच्च कोटि का स्रोत और सौभाग्य का सर्वोत्तम स्रोत दो दुनियाओं में हमारा कल्याण है। गुलामी से मनुष्य को सम्मान, संतुष्टि और आराम मिलता है। जो गुलामी से मुक्त हैं वे अभागे लोग हैं। अल्लाह हमें हमेशा पापों से दूर रखे और उन्होंने हमें नमाज़ और दुआएँ करने के साथ-साथ व्यापक रूप से तिलावत करने की सलाह दी है। (आमीन)। पवित्र पुस्तक कुरान में तिलावत के बारे में बहुत सी सलाह दी गई है।

संक्षेप में, गायन क्या है? यह दूसरी दुनिया की यात्रा का प्रावधान है। नतीजतन, यह गायन के लिए आवश्यक है, और गायन में कोई कठिनाई नहीं है। नतीजतन, इस मामले में कोई लापरवाही नहीं होनी चाहिए, जैसा कि गायन में कहा गया है।

13. अल्लाह के वादों में कोई निराशा नहीं है।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी है कि मनुष्य को अपनी क्षमता के अनुसार अल्लाह की इबादत में लगना चाहिए और अल्लाह से निराश

नहीं होना चाहिए। अल्लाह से निराश होना भी धोखा है। इसमें कोई संदेह नहीं कि अल्लाह की मोहब्बत अपने बंदों के लिए 70 मांओं से भी ज्यादा है। ऐसे वादों के बाद भी निराश होना बहुत बुरी चीज है। अगर रोना है तो अपने गुनाहों और लापरवाही पर रोओ। लेकिन अल्लाह की रहमत से कभी निराश मत हो। इसलिए हुक्मों की रोशनी में हुक्मों पर अमल करके हमें अल्लाह की रहमत की पूरी उम्मीद है।

14.पढ़ने या लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह देते हुए कहा है कि भाई अगर तुम पढ़े-लिखे नहीं हो तो कोई बात नहीं। जब तुम शिष्य बन जाओ तो हर समय पाप से दूर रहो। अगर अल्लाह की याद के लिए कोई सलाह है तो वह यह है कि खड़े, बैठे या चलते समय जितना हो सके उतना याद करो। सुबह तीन बजे उठना, वुज़ू करना, दो रकात नमाज़ पढ़ना, अल्लाह की याद में लग जाना और फिर फजर की नमाज़ पढ़ना इस काम को पूरा करना। अगर तुम इस मामले में इस तरह की प्रतिबद्धता का पालन करोगे तो अल्लाह चाहेगा तो मदद जरूर मिलेगी।

15. शिष्य से क्या करने की अपेक्षा की जाती है?

, "भाई, ध्यान रखो कि प्रतिज्ञा करो और पापों से दूर रहकर दिन-रात अल्लाह की याद में लगे रहो, जो कि जरूरी है।" और, यदि संभव हो तो, पवित्र लोगों के साथ समय बिताने और वास्तविकता के अर्थ पर विचार करने के लिए समय निकालो। भगवान उसे दूर रखें!

यदि ऐसा अवसर न हो तो हर कीमत पर पाप से बचना चाहिए। तथा दिन-रात चलते-फिरते, खड़े-खड़े, बैठते हुए, किसी भी हालत में, अल्लाह की तिलावत में लगे रहना चाहिए, अल्लाह की तिलावत से किसी भी तरह की अनदेखी नहीं होनी चाहिए।

जो व्यक्ति निरंतर अल्लाह की याद में लगा रहेगा, उसे अल्लाह का बंदा कहा जाता है। अगर हम अल्लाह की याद में लगे रहेंगे, तो अल्लाह भी हमें याद करेगा। अगर कोई अल्लाह की याद करेगा, तो अल्लाह भी हमें याद करेगा। अल्लाह की याद को किसी भी हालत में नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए।

व्यापार के लेन-देन में लगे रहते हुए भी हम अल्लाह की याद में लगे रह सकते हैं। अल्लाह की खातिर अल्लाह की याद को मत भूलना। अगर अल्लाह चाहेगा तो तुम्हारा लक्ष्य और उद्देश्य अवश्य पूरा होगा। अल्लाह हमें तिलावत करने की इच्छा प्रदान करे और हमें मार्गदर्शन प्रदान करे (आमीन)।

16. हमारा परिणाम हमारी प्रतिबद्धता के अनुसार होगा

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि " यदि हमारा जीवन अल्लाह की याद और अल्लाह की गुलामी में बीतना है, तो प्रत्येक व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा।"

अल्लाह हमें ऐसा काम करने की दैवी मदद दे। (आमीन) जिन लोगों ने अपनी ज़िंदगी ऐसे कामों में बिताई है, वे खुद को ऐसी परिस्थितियों में पाएंगे। अल्लाह रहम करे। (आमीन)

17. अल्लाह के मार्ग में कठिनाई कृतज्ञता है

उन्होंने छात्रों को सलाह दी है कि अल्लाह के रास्ते में मुश्किलें ही आराम हैं। और ऐसी दौलत जो आख़िरत में भी हमारे साथ रहेगी। तो दुनिया में इससे बड़ी कोई फ़ज़ल या कोई दौलत नहीं। अल्लाह ऐसी दौलत अता करे। (आमीन)

18. अल्लाह का ज़िक्र ही हमारी नजात है

उन्होंने छात्रों को सलाह दी है कि अल्लाह की याद में अपनी ज़िंदगी गुज़ारना ही काफी है, तभी हमारे लक्ष्य पूरे होंगे। अल्लाह

हमें बुरी आदतों और गुमराह सोच से दूर रखे। (आमीन)

परिणामस्वरूप, हमें अल्लाह को याद रखना चाहिए और पवित्र लोगों की स्थिति से हमें दूर रखने वाली स्थितियों से बचना नहीं चाहिए। अल्लाह हमें सही रास्ते पर चलने में मदद करे।

19. हमें पवित्र स्थानों पर कब जाना चाहिए?

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी है कि "यदि आपके पास समय है, क्षमता है, तो पवित्र स्थानों की यात्रा अवश्य करें।" और कठिनाई का सामना करें, कोई क्रम नहीं है, और आपको अपनी निर्भरता को परेशानी नहीं देनी चाहिए। इसलिए यदि यात्रा करने का अवसर नहीं मिलता है, तो उसे दुखी नहीं होना चाहिए। हमेशा ईश्वर की इच्छा के आगे समर्पण करें और अल्लाह हमें अच्छी स्थिति में रखे। (आमीन)

20. मोमिन (आस्तिक) का काम

उन्होंने छात्रों को सलाह दी है कि "मोमिन का एकमात्र काम अल्लाह और उसके नबी का बुलावा है और इसके अलावा इस मामले में कुछ नहीं है।" इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह दया करता है और अपने बंदों की मदद करता है। लेकिन हमें भरोसा नहीं है।

अतः अल्लाह और उसके नबी की आज्ञाकारिता में कभी भी कोई अज्ञानता नहीं होनी चाहिए। अल्लाह हमें अच्छाई से रखे और लापरवाही से बचाए। (आमीन)

21. सही रास्ता और धैर्य

उन्होंने छात्रों को सलाह देते हुए कहा, "भाई, सही रास्ते पर चलने में कठिनाई होती है, और उसे जीवन भर अपनाना पड़ता है।" अल्लाह हमें गुमराही से दूर रखे और हमारे जीवन का सुखद अंत करे। (आमीन)

22.समय का महत्व

उन्होंने छात्रों को सलाह दी है कि "अल्लाह की याद और पवित्र व्यक्तियों की याद में बिताया गया समय निस्संदेह महत्वपूर्ण है।" अल्लाह हम सभी को मार्गदर्शन प्रदान करे ताकि हम अपने जीवन को ऐसे मामलों में व्यतीत कर सकें। (आमीन)

23. हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम) का आभार

उन्होंने छात्रों से कहा है कि उन्हें "आपको यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि मुझे

आपका पोस्टकार्ड मिल गया है और बोधन आने में मुझे कोई परेशानी नहीं हुई।" इसलिए, इसकी चिंता न करें। लेकिन मुझे आप सभी से वहाँ मिलकर खुशी हुई। अल्लाह हम सभी को गुलामी में अपना जीवन बिताने की सलाह दे। (आमीन)

24. समस्त मानवता सृष्टिकर्ता की रचना है।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह देते हुए कहा, "अब बारिश हो रही है।" और मौसम सर्द है। अल्लाह की कृपा और कृपा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि सारी मानवजाति उसकी दया और कृपा के लिए निर्माता पर निर्भर है। और उसके अलावा, कोई भी ऐसा नहीं है जो हमें हमारी कठिनाइयों से बचा सके।

अतः हमें हर हालत में उसे याद करना चाहिए और उसकी ओर पुकारना चाहिए, जो कि एक मुसलमान (ईमानवाले) व्यक्ति का काम है। अल्लाह हमें लापरवाही से दूर रखे। (आमीन)

25. भाग्यशाली व्यक्ति कौन है?

उन्होंने छात्रों को सलाह देते हुए कहा, "मैंने 'तड़कीर्तल औलिया' पुस्तक के अध्ययन

के बारे में लिखा है और आशा है कि सभी इसे पढ़ रहे होंगे; इसके कई लाभ हैं, और इसमें मेरा व्यक्तिगत अनुभव भी है।"

इसमें कोई संदेह नहीं कि जो लोग अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने में लगे रहते हैं, वे भाग्यशाली होते हैं।

26. अल्लाह पालनहार भी है और दयावान भी।

"भाइयों, इसमें कोई संदेह नहीं कि अल्लाह पालनहार और दयालु है," उन्होंने छात्रों को सलाह दी। और जो बिना चूके सभी को भोजन उपलब्ध कराता है। लेकिन हमें उस पर भरोसा करना होगा, जो उचित है। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह एक वास्तविक पालनहार है। उससे उम्मीद की जाती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि अल्लाह हमारी मुश्किलों को दूर करेगा। अल्लाह हम सभी को अच्छा रखे। (आमीन)

27.पैगम्बर के कार्य और क्रम

उन्होंने छात्रों को सलाह दी है कि "मेरे मन में यह विचार है कि मुझे सभी समारोहों में भाग लेने से बचना चाहिए, क्योंकि ज्ञान बैठकें अनिवार्य हैं और ये अनावश्यक हैं।"

और ऐसा करना ज़रूरी है ताकि फ़र्ज़ को पूरा किया जा सके। इसके अलावा, ज़रूरत से ज़्यादा फ़र्ज़ का कोई मतलब नहीं है। इसलिए अल्लाह हम सबको लापरवाही से दूर रखे। (आमीन)

28.जीवन की आत्मा गुलामी है

उन्होंने विद्यार्थियों को समझाया कि गुलामी क्या है? और गुलामी जीवन की आत्मा है और जो लोग गुलामी में लापरवाह हैं, वे मुर्दे के समान हैं। हमें गुलामी से दूर नहीं रहना चाहिए। इसलिए हमेशा अल्लाह और उसके नबी के आदेशों का पालन करें। इसमें हमारा कल्याण है। अल्लाह हम सभी को अच्छा रखे। (आमीन)

29.पैगम्बर का विवाह और आदेश

उन्होंने छात्रों को सलाह दी, "आप सभी को बधाई।" मेरी दुआ है कि आप दोनों प्यार से रहें और अपने बड़ों की सेवा करें, और आज्ञाकारिता में कोई लापरवाही न बरतें। और हमारी भलाई बड़ों और वरिष्ठ व्यक्तियों की दुआओं में निहित है, जो हमारी बड़ी सफलता का

स्रोत है। अल्लाह हमें लापरवाही से दूर रखे। (आमीन)

30. रमजान के महीने का महत्व

उन्होंने छात्रों को सलाह दी है कि "रमज़ान का महीना आ गया है, और सभी अच्छे कामों के लिए सवाब है, सिवाय रमज़ान के महीने में रोज़े रखने के सवाब के, जिसके लिए अल्लाह कहता है कि "वह खुद सवाब देगा।" अल्लाह हमें ऐसे कामों से वंचित न करे। (आमीन)। इसलिए हमारा जीवन अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञाकारिता में व्यतीत हो, और तब इस मामले में हमारी सफलता होगी।

31. गुलामी और विनती

उन्होंने छात्रों को सलाह दी है कि अल्लाह की कृपा और कृपा के बिना हमारा जीवन असंभव है। इसलिए हमें दिन-रात अल्लाह की गुलामी और उससे प्रार्थना में लगे रहना चाहिए। यह हमारे अपने भले के लिए है। अल्लाह हम सब पर रहम करे और हमारी मुश्किलों को दूर करे। (आमीन)

32. अल्लाह की कृपा उपलब्ध है।

उन्होंने छात्रों को सलाह दी है कि "हमारे इलाके में बहुत बारिश हो रही है।" पानी की टंकियों में पानी है। इसलिए अल्लाह की कृपा उपलब्ध है। लेकिन हम अल्लाह की गुलामी में लापरवाही बरत रहे हैं।

33.धोखा क्या है, और लापरवाही क्या है?

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी है, "हे अल्लाह, हम सभी को जीवन के अंत तक इसी मार्ग पर रखना और हमारे जीवन का सुखद अंत करना" (आमीन)। "अरे भाई, इस मार्ग पर हर कदम पर लापरवाही देखने को मिलती है।" अच्छे लोग गलत रास्ते पर चल रहे हैं। गुमराही क्या है? आज्ञाओं के विरुद्ध काम करना। लापरवाही क्या है? व्यापक और व्यापक लालच और वासना। "अल्लाह हमें ऐसी विशेषताओं से दूर रखे।" (आमीन)

34. सफलता का उच्चतर स्रोत

उन्होंने छात्रों को सलाह दी है कि "दोनों दुनियाओं में सफलता का उच्च-श्रेणी स्रोत यह है कि आप अपना जीवन पापों से दूर रखें और अपने व्यापारिक लेन-देन में अल्लाह को न

भूलें।" अतः अल्लाह हम सभी को आशीर्वाद दे। (आमीन)

35. ईश्वर की इच्छा के अनुसार जीना,

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी, "भाई, ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण की स्थिति में रहो।" इसके अलावा कोई रास्ता नहीं है। इसलिए मनुष्य को कृतज्ञता और धैर्य की स्थिति में रहना चाहिए, जो हमारे कल्याण के लिए अनुकूल है। और इससे दोनों दुनिया में सफलता मिलेगी और मौन की स्थिति में अल्लाह का स्मरण होगा, जो अच्छा है। और, यदि संभव हो तो, अल्लाह के पवित्र लोगों की किताबें पढ़ें। अल्लाह हमें लापरवाही से बचाए रखे। (आमीन)

36. जो ज्ञान और कर्म में श्रेष्ठ हैं।

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "जो लोग सही काम करेंगे, उनका ज्ञान सही होगा और अल्लाह और उनके नबी उनकी मदद करेंगे।" इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं है कि ऐसे लोग भाग्यशाली और

नेक हैं, क्योंकि वे सांसारिक पापों से मुक्त हैं और अल्लाह की याद में अपना जीवन बिताते हैं। इसलिए इस दुनिया और उसके बाद उनका जीवन अच्छा होगा। अल्लाह हमें गुमराही और लापरवाही से बचाए। (आमीन)

37. अल्लाह की दयालुता को अपने
से दूर न होने दो।

"अल्लाह की रहमत और उसकी कृपा से निराश मत हो।" उन्होंने छात्रों को सलाह दी। ज्ञान की स्थिति आज्ञा के प्रकाश में प्रयासों का पालन करने से परिभाषित होती है। लेकिन अल्लाह की कृपा से कभी निराश मत हो। अल्लाह हमें सही रास्ते पर चलने में मदद करे। (आमीन)

38.छात्र को सलाह

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "अल्लाह की याद का ध्यान रखें और यदि संभव हो तो अल्लाह के पवित्र व्यक्तियों की जीवनी पुस्तकें पढ़ें, जो अच्छी इबादत भी है।" "अल्लाह हमारे जीवन का सुखद अंत करे" (आमीन)।

39. गायन और स्वास्थ्य

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "अपने स्वास्थ्य और स्वभाव के अनुसार अल्लाह का ज़िक्र करना अच्छा है।" इसलिए अल्लाह का ज़िक्र करना न भूलें । इसलिए हमेशा अल्लाह के ज़िक्र का ख्याल रखें। अल्लाह हम सभी को दोनों जहानों में बरकत दे। (आमीन)

40. युवा काल और गुलामी का शौक

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "युवावस्था में अल्लाह और उसके पैगम्बर का स्मरण करो, जो हमारे लिए सौभाग्य की बात है।" अतः अल्लाह, हमें हमारे जीवन के अन्त तक सही मार्ग पर रखे (आमीन), और यही सर्वोत्तम प्रकार की दुआ है।

41.'तड़कीरातल औलिया' पुस्तक का महत्व

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "तादिरातल औलिया पुस्तक की प्रस्तावना अवश्य पढ़ें।"

बहरहाल, 'तद्किरातल औलिया' किताब को पहले पन्ने से पढ़ना शुरू करें; 'तद्किरातल औलिया' का हर एक शब्द एक पवित्र व्यक्ति द्वारा कहा गया है, और यह अल्लाह की पवित्र किताब कुरान से कम पवित्र नहीं है। जो हालात और घटनाएं पढ़ने और सुनने के लिए महत्वपूर्ण हैं। अल्लाह हमें उनमें शामिल करे और हमें उनसे दूर रखे। (आमीन)

42.हमारे कर्मों का परिणाम

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "हैदराबाद में अजीब सी अशांति है।" हर कोई बेचैन और परेशान महसूस कर रहा है। कोई भी वहां सहज स्थिति में नहीं है। यह सब अल्लाह का प्रकोप है। यह हमारे कर्मों का परिणाम है। इसलिए अल्लाह हम सभी को सावधान रहने का निर्देश देता है और हमारे व्यापारिक लेन-देन को हुक्म के अनुसार निर्देशित करता है। (आमीन)

43.ज्ञान क्या है और कर्म क्या है?

"अल्लाह अपने पैगम्बर की खातिर उन्हें ज्ञान की वास्तविकता और गुनाहों से बचने की ज़रूरत की समझ दे (आमीन)।" उन्होंने विद्यार्थियों से कहा और यही हमारी ज़िंदगी का लक्ष्य है और इसमें दोनों जहाँ की सफलता है। इसके अलावा, अगर हम आसमान में उड़ें तो कोई नतीजा नहीं मिलेगा।

हालाँकि, यह शैतान का काम है। अल्लाह हम सभी को ऐसा ज्ञान और कार्य प्रदान करे (आमीन)।

44. हमारे सहायक अल्लाह और उसके नबी हैं।

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "अल्लाह और उसके पैगम्बर के अलावा कोई नहीं है।" हमारा तरीका दिन-रात हर समय उनके आदेशों का पालन करना है। इसलिए दोनों दुनियाओं में हमारी सफलता और लक्ष्य अल्लाह की कृपा और पैगम्बर के दान के कारण हैं। अल्लाह हमें लापरवाही से दूर रखे। (आमीन)

45. अल्लाह की कृपा और दया

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि अल्लाह अपनी इच्छा के अनुसार किसी को भी कृपा प्रदान करता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह सही है और अब जब प्रकृति ने हमें शांति और आराम प्रदान किया है, तो हमारा काम यह होना चाहिए कि हम अपने जीवन के बाकी हिस्से को अल्लाह को याद करने और उसकी इबादत करने में बिताएं, साथ ही पवित्र लोगों के जीवन का अध्ययन करें। और दुआएं भेजें, नमाज़ अदा करें, अल्लाह से दुआ करें और उसमें अपना जीवन व्यतीत करें, जो हमारे लिए अनिवार्य है। अल्लाह हम सभी को ऐसी ही हिदायत अता करे (आमीन)।

46. अल्लाह के ज़िक्र से शान्ति और आराम मिलता है।

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "उन्हें डाक कार्ड ठीक से मिल रहे हैं और विवरण जानने के बाद वे संतुष्ट हैं।" लेकिन अल्लाह की याद और नबी की आज्ञाकारिता में बहुत शांति और आराम है। गुलामी और अल्लाह को याद करने के अलावा संतुष्टि का कोई दूसरा स्रोत नहीं है।

अतः अल्लाह हम सभी को यह कृपा प्रदान करे कि हम अपनी गुलामी में लापरवाही न बरतें (आमीन)।

47.प्रकृति किसकी मदद करेगी?

उन्होंने छात्रों से कहा कि "जो लोग अल्लाह और उसके पैगम्बर के लिए अपना जीवन समर्पित करते हैं, वे धन्य और भाग्यशाली हैं। प्रकृति उनके सभी प्रयासों में उनकी सहायता करेगी, लेकिन अधिकांश लोग इस तथ्य से अनजान हैं। जो लोग जागरूक हैं, वे इस पर विश्वास नहीं करते हैं। परिणामस्वरूप, वे हैरान और चिंतित दोनों हैं। और वे असहनीय दर्द में होंगे। इसलिए अल्लाह हमें लापरवाही और धोखे से बचाए। (आमीन)

48. अल्लाह ने किससे वादा किया है?

उन्होंने छात्रों से कहा कि "अल्लाह उन लोगों की मदद करेगा जो अल्लाह और उसके पैगंबर की आज्ञाकारिता में अपना जीवन

व्यतीत करते हैं। इसके लिए, अल्लाह का वादा है कि "कौन पवित्र व्यक्ति है, और वह हमारी हिरासत में है?" इसलिए अल्लाह हम सभी को हर समय लापरवाही से दूर रखे और हमें अपने जीवन को गुलामी में बिताने का मार्गदर्शन करे (आमीन)।

49.बड़ी प्रार्थना ही सही रास्ता है।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी, "हमारे हक में सबसे बड़ी दुआ क्या है?" इसका मतलब है कि अपने जीवन के अंत तक सही रास्ते पर बने रहना और यही हमारी पूर्णता है। क्योंकि जिसने अपनी ज़िंदगी इसी रास्ते पर गुज़ारी है, वह निस्संदेह अल्लाह के दरबार में स्वीकार किया जाएगा, लेकिन हर काम में धैर्य और दृढ़ता की आवश्यकता होती है, और धैर्य और दृढ़ता के बिना सब कुछ बेकार है। अल्लाह हमें आशीर्वाद दे। (आमीन)

50.पापों का परिणाम

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि वे अल्लाह से प्रार्थना करें कि वह उन्हें पापों से बचाए। (आमीन) और सभी दोष, विनाश और नुकसान केवल पाप का परिणाम हैं। अल्लाह की गुलामी

क्या है, अल्लाह दया करे कि आपको हर समय पापों से सुरक्षित रखे और अल्लाह को याद करते हुए अपना जीवन बिताएं। एक व्यक्ति जो इस तरह से अपना जीवन व्यतीत करता है, वह निस्संदेह दोनों दुनिया में सफल होता है। अल्लाह इस मामले में ऐसे काम के लिए सभी को पदोन्नति का इनाम दे। (आमीन)

इस सूची में दूसरा आइटम है धैर्य और दृढ़ता, दोनों ही आवश्यक हैं। धैर्य से ही बड़े-बड़े काम पूरे हो सकते हैं। और धैर्य से ही मुश्किलों का समाधान भी निकल सकता है। लेकिन हर काम को निर्देशों के अनुसार और धैर्य के साथ पूरा करना चाहिए।

51. धैर्य और दृढ़ता

उन्होंने छात्रों को सलाह दी, "यह जानकर खुशी हुई कि मन में बदलाव आ रहे हैं।" अल्लाह सभी को ऐसा मार्गदर्शन और ईश्वरीय सहायता प्रदान करे। (आमीन)। लेकिन एक शर्त है: अगर वह अपने जीवन के अंत तक इस तरह दृढ़ रहे, तो वह सफल होगा। जिसने भी कोई मुकाम हासिल किया है, वह सिर्फ धैर्य और दृढ़ता के बल पर ही मिला है। अल्लाह धैर्य और दृढ़ता प्रदान करे। (आमीन)

52.लोकप्रियता का स्रोत

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी, "भाइयों, लोकप्रियता का सबसे अच्छा स्रोत यह है कि मनुष्य को हर हालत में पाप से तौबा करनी चाहिए और अल्लाह से दुआ करनी चाहिए, जिसमें हमारी मुक्ति है।" जो व्यक्ति कठिनाई में अल्लाह को याद करता है और फिर आराम में भी अल्लाह को याद करता है, वह निस्संदेह एक नेक इंसान है।

बन्दे का काम सिर्फ़ अल्लाह को पुकारना है और कोई दूसरा काम नहीं। अल्लाह हमारी आख़िरत को अच्छा फरमाए। (आमीन)

53. हर हालत में अल्लाह का शुक्र अदा करना

उन्होंने छात्रों को सलाह दी, "यह तो पता ही है कि तुम्हारा तबादला हो चुका है।" इसमें भी अल्लाह की रजा है और इस मामले में किसी का बस नहीं है। लेकिन गुलामों का काम है कि वे दिन-रात अल्लाह की गुलामी में लगे रहें। जो भी होगा कुदरत करेगी और हमें उसे सिर झुकाकर स्वीकार करना चाहिए। अल्लाह हमें हर हाल में शुक्रगुजार और इबादत करने वाला बनाए। (आमीन)

54. क्षमता के अनुसार उपचार

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी, "भाई, याद रखो कि मनुष्य का जीवन प्रकृति के हाथ में है, और जब तक जीवन है, तब तक कुछ नहीं होगा, और अब उपचार कार्य के बारे में, हमें अपनी क्षमता के अनुसार उपचार करना होगा।" संसार क्षणभंगुर और नश्वर स्थान है।

यह जगह भरोसे के लायक नहीं है। अल्लाह हमें अल्लाह की गुलामी में लापरवाही से दूर रहने की हिदायत दे।

55. इस दुनिया में कठिनाई है और दूसरी दुनिया में आराम है

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी, "वास्तव में वे लोग भाग्यशाली हैं जो अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञाकारिता में लगे रहते हैं।" इस दुनिया में उन पर जो भी कठिनाई आई है, परलोक में उन्हें बड़ी कृपा मिलेगी, जो सही है। यही कारण है कि अल्लाह के पवित्र लोग दिन-रात संकट में रहते थे।

अल्लाह की रहमत पर कोई शक नहीं है। अल्लाह हमारी ज़िंदगी का सुखद अंत अता करे और आख़िरत में हम पर रहमत फ़रमाए। (आमीन)

56. युवा काल और उपासना का महत्व

उन्होंने कहा, "युवा लोगों से मेरी यही प्रार्थना है कि वे पापों से दूर रहें और अल्लाह की इबादत में लग जाएं।" क्योंकि पापों से सुरक्षित रहना और अल्लाह की इबादत और दुआ में लग जाना, जो कि एक बड़ी इबादत है, वह व्यक्ति युवावस्था में पापों से सुरक्षित रहेगा और इसमें कोई संदेह नहीं कि वह व्यक्ति भाग्यशाली और सौभाग्यशाली है। अल्लाह सही रास्ते पर धैर्य और दृढ़ता प्रदान करे। (आमीन)

57. अच्छे लोग वे हैं जो गलत काम और लापरवाही से बचते हैं।

उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि जो लोग धोखे और लापरवाही से बचते हैं, वे सफल होते हैं और अपनी मंजिल पर पहुंचते हैं और इसमें कोई संदेह नहीं कि यह सही है, इसके अलावा सब बेकार है।

58. पवित्र लोगों को भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि उन्हें हर परिस्थिति में अल्लाह को याद करना नहीं भूलना चाहिए। और अल्लाह की याद

में हमेशा उसके ख्याल और जुनून में रहना चाहिए। आप भाग्यशाली व्यक्ति हैं। लेकिन ध्यान रखें कि अल्लाह के पवित्र बंदों को भी मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। यह मुश्किल कोई मुश्किल नहीं है, इसमें हमारी मुक्ति है। और यही भविष्य में हमारा लक्ष्य होगा।

मोमिन ने मुश्किल को आराम से तुलना की है और लापरवाह लोगों के लिए मुश्किल अज़ाब है। अल्लाह हम सबको हिदायत अता फरमाए कि हम अपनी पूरी ज़िंदगी अल्लाह की याद के जुनून में गुज़ारें। (आमीन)

59. आख़िरत के जीवन व्यवहार में अल्लाह की ग़ुलामी है।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि बेशक ऐसे लोग किस्मतवाले और भाग्यशाली होते हैं और सही रास्ते पर होते हैं। वे परलोक के सौदागर हैं और यह सब अल्लाह की गुलामी के कारण ही संभव है। सिवाय इसके कि दुनिया की हर चीज़ अस्थायी व्यवस्था है। इसलिए एक ही दुआ है: अल्लाह सबको हर परिस्थिति में शुक्रगुज़ार और धैर्यवान बनाए। (आमीन)

60.पैगम्बर पर दुआ भेजने का महत्व

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि एक अनुरोध किया जाता है, कि वे याद को पूरी तरह से छोड़ दें क्योंकि इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। हालांकि, अगर आपके पास खाली समय और अच्छी स्थिति है, तो आपको अल्लाह के पैगंबर पर दुआ पढ़नी चाहिए। और दुआ में ठंडक होगी।

और हम प्रत्येक प्रार्थना के बाद आशीर्वाद के व्यापक पाठ के परिणामस्वरूप अल्लाह से दुआ करते हैं। और अधिक पाठ के कारण, अल्लाह के नबी से मदद मिलेगी।

61. इलाज और सुझाव

उन्होंने छात्रों से कहा, "भाई, प्रकृति के मामलों में कोई भी दखल नहीं दे सकता।" यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम धैर्य रखें, प्रार्थना करें और अपनी क्षमता के अनुसार इलाज का प्रबंध करें। इसलिए अल्लाह से स्वास्थ्य सुधार के लिए प्रार्थना करें। (आमीन) इलाज का प्रबंध पैगंबर की सुन्नत के अनुसार है।

62. कार्रवाई और शर्तें

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "हैदराबाद शहर में बहुत अशांति है और यह सब हमारे कर्मों और पापों का परिणाम है।" इसलिए

हमारी सफलता केवल आज्ञाओं के अनुसार है, अन्यथा आश्चर्य और चिंता के अलावा कुछ नहीं है। वास्तव में मानवता की भलाई अल्लाह और उसके पैगम्बरों की आज्ञाकारिता पर निर्भर है।

अल्लाह हम सबको लापरवाही से बचाए। (आमीन) असल में जो लोग अल्लाह और उसके नबी की इताअत करते हैं, वे सुरक्षित हैं। और कौन सा सही है? दिन-ब-दिन हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं। ऐसे समय में हमें आखिरत के बारे में सोचना चाहिए, जो कि जरूरी है। अल्लाह रहम करे। (आमीन)

63. पत्र और पत्राचार भेजने का महत्व

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि पत्र-व्यवहार भेजने से याददाश्त ताज़ा होगी और यह लापरवाही को रोकने का काम करेगा, जो कि प्रेम का सबूत है। जिस किसी को किसी चीज़ या व्यक्ति से प्रेम हुआ होगा, उसे वह याद होगा। इसलिए हम सभी को अल्लाह और उसके नबी की मोहब्बत में दृढ़ रहना चाहिए। (आमीन)

64. दुनिया एक कारवां है, सराय

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "यह ज्ञात हो गया है कि खाजा मोइनुद्दीन साहब का निधन

हो गया है।" अल्लाह उन्हें जन्नत में जगह दे और मृतक के परिवार वालों को सब्र दे। (आमीन)। हम सभी को इस दुनिया से चले जाना है। और दुनिया एक कारवां सराय है, जिसमें एक व्यक्ति आता है और दूसरा चला जाता है। यह सब झूठी कहानी है। दूसरी ओर, जो लोग अल्लाह और उसके नबी की आज्ञा का पालन करते हैं, वे धन्य हैं।

उन्होंने दोनों दुनियाओं में और अल्लाह की बारगाह में भी क़बूल किया। अल्लाह तुम्हें ग़फलत और गुमराही से दूर रखे। (आमीन) तो दुनिया एक मुद्दत की जगह है और वह एक फ़ानी ठिकाना है। अगर आख़िरत में कोई भलाई है तो वह हमेशा के लिए फ़ायदेमंद है।

65. स्थानांतरण और निर्देश

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि, "भाई, यह दुनिया है, और इस जगह पर हम हमेशा एक रंग में नहीं रह सकते।" नतीजतन, हमें इस संबंध में नई जगहों की यात्रा करनी चाहिए। नतीजतन, हमें चिंतित नहीं होना चाहिए। याद रखें कि आप जहां भी रहते हैं और जहां भी जाते हैं, हमें अपना रास्ता नहीं छोड़ना चाहिए। और इसमें

हमारी सफलता निहित है। अल्लाह हमें हमारे जीवन के अंत तक सीधे रास्ते पर रखे। (आमीन)

66. दुनिया की हकीकत

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "अल्लाह से दुआ है कि हमारी बाकी की ज़िन्दगी उसकी गुलामी में गुज़रे, और इसके अलावा हमारे साथ कोई लेन-देन नहीं है, और इस दुनिया में ऐसी दौलत और साधन हैं जो अस्थायी हैं, स्थायी नहीं।" आख़िरत के लेन-देन गुलामी हैं, जो नकद है। अल्लाह रहम करे। (आमीन)

67. रमज़ान का महीना उनका पवित्र महीना है

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि रमज़ान का महीना आ रहा है और हमें रोज़ा रखने के लिए तैयार रहना चाहिए। और अगर हम किसी कारण से रोज़ा छोड़ देते हैं, तो ऐसा व्यक्ति अल्लाह की रहमत से दूर हो जाता है। रमज़ान का महीना एक पवित्र महीना है, लेकिन इसका फ़ायदा सिर्फ़ उन लोगों को होता है जो इसे रखते हैं। ये वास्तव में मोमिन (ईमान वाले) लोग हैं। और उन्हें इस महीने की रहमत से दूर नहीं रखा जाएगा। रमज़ान के महीने में रोज़ा रखना बेहद ज़रूरी है। हालाँकि, मजबूरी के मामलों में रियायतें या अपवाद हैं। अल्लाह

हमें इस पवित्र और धन्य महीने का भरपूर फ़ायदा उठाने की तौफीक दे। (आमीन)

६८. सभी समस्याएँ केवल पाप के कारण हैं ।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि वे अल्लाह से प्रार्थना करें कि वह उन्हें पाप रहित रखे। और हमें हर उस काम में मार्गदर्शन प्रदान करें जो हम आदेशों की रोशनी में करते हैं, ताकि हम अल्लाह के दरबार में स्वीकार किए जाएँ। (आमीन) चाहे लाख मुसीबतें और कठिनाइयाँ हों, लेकिन आप पाप में शामिल नहीं होंगे जो हमें हमारी समस्याओं में लाता है। अल्लाह हम पर रहम करे। (आमीन), और यह हमारा कर्तव्य है कि हम दिन और रात पापों से दूर रहें और अल्लाह से प्रार्थना और प्रार्थना में लगे रहें। क्योंकि सभी समस्याएं केवल पापों के कारणों से उत्पन्न होती हैं। चिंताओं और आश्चर्यों के लिए केवल पाप ही जिम्मेदार है। अल्लाह हमें सुरक्षित रखे और लापरवाही और भ्रामक शब्दों से दूर रखे (आमीन)।

69. नबी का समय और आदेश

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी, "भाइयों, यह समय सिर्फ़ अल्लाह की इबादत का है।" जो भी मिले, खाओ। और जो भी मिले, पहनो और अल्लाह की याद में लगे रहो। अल्लाह और उसके

नबी की इबादत ही कामयाबी का बड़ा ज़रिया है। हुक्म के खिलाफ़ काम होगा और नतीजा बुरा होगा। अल्लाह हम सबको सलामत रखे। जो जवानी में नेक कामों में लगा रहा, उसे बुढ़ापे में आराम मिलेगा और अल्लाह की मदद मिलेगी।

70.वर्तमान समय में सफलता का कारण

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "यह अल्लाह के क्रोध और प्रकोप का समय है।" और हमने इस समय को छोड़कर, केवल अल्लाह की याद और गुलामी में ही जीवन व्यतीत किया है, और कुछ नहीं है। इसलिए हमें दिन-रात पापों से बचना चाहिए और अल्लाह की याद में लगे रहना चाहिए और आदेशों की रोशनी में व्यापार करना चाहिए। इसलिए अल्लाह हम सभी को समस्याओं से बचाए। (आमीन)

71. किसी भी हालत में अल्लाह की बन्दगी में कोई कोताही नहीं

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि बंदे को किसी भी हालत में अल्लाह की गुलामी में लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए। (आमीन)

अगर कामयाबी का कोई बड़ा ज़रिया है तो वह सिर्फ़ ग़ुलामी है। इसके अलावा कोई दूसरा ज़रिया नहीं है। जो लोग अपने गुनाहों में महफ़ूज़ रहेंगे और अपनी ज़िंदगी अल्लाह की

याद में गुज़ारेंगे। और ऐसे लोग बहुत खुशनसीब हैं। अल्लाह तुम्हें गुमराही से महफ़ूज़ रखे। (आमीन)

72. पैगम्बर की राजनीति और आदेशों में भागीदारी

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "लोग राजनीति में शामिल हो रहे हैं।" यह दुखद है कि वे इस तरह से जीवन जीकर इस तरह की व्यस्तता में शामिल हो रहे हैं। अल्लाह रहम करे। (आमीन)

73. दुनिया पगडंडियों का स्थान
है.

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "दुनिया एक ऐसी जगह है जहाँ बहुत सारे रास्ते हैं। जो लोग यहाँ नेक काम करते हैं, वे सफल होते हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। जो लोग बुरे काम करते हैं, वे मिट्टी में मिल कर परलोक की खुशहाली खो देते हैं। इसलिए अल्लाह हमें लापरवाही और गुमराही से दूर रखे और हमें मार्गदर्शन के मार्ग पर रखे। (आमीन) अल्लाह हम सभी को हमारे जीवन के अंत तक सही रास्ते पर रखे। (आमीन)। इस दुनिया में कोई भी अच्छा स्रोत या आधार नहीं है। अगर हम कई सालों तक जीते हैं, तो हमें एक दिन मरना ही

है। और हमें ये सब चीजें छोड़ देनी चाहिए । अल्लाह की रहमत आप पर बनी रहे। (आमीन)

74.युवा काल की पूजा बहुत महान है।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "भाइयों, इस मार्ग को अपनाना आसान है।" लेकिन जीवन के पूरे कालखंड में इसका पालन करना, जो कि पूर्णता है। और ऐसे लोग अल्लाह के दरबार में स्वीकार किए जाएंगे। जवानी की महान पूजा पापों से मुक्त होना और अल्लाह के पवित्र लोगों की संगति में रहना, अल्लाह से प्रार्थना और दुआ करना और गुमराही से दूर रहना और दया की आवश्यकता से दूर रहना है (आमीन)। जीवन के अंत तक इस मार्ग पर चलना विशेष बात है, जो कि पूर्णता का विषय है। क्योंकि जिन्हें पद और प्रतिष्ठा दी गई थी, उनके पास केवल धैर्य और उनके पैरों में दृढ़ता थी। अल्लाह हमें धैर्य और पैरों की दृढ़ता प्रदान करे (आमीन)।

75.छात्र का दैनिक कार्यक्रम

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि वे प्रतिदिन कोई पुस्तक पढ़ने का महत्व ध्यान में रखें, जैसे कि 'कुतुबत गौसिया' या 'ताडकरताल औलिया'। क्योंकि इस समय की परिस्थितियां बहुत खराब और सात्विक काल की हैं। सुबह से शाम तक लापरवाही का कारोबार और

लापरवाही की बातचीत चलती रहती है। नतीजतन, आपको ऊपर सूचीबद्ध पुस्तकों को अवश्य पढ़ना चाहिए।

इन किताबों को पढ़ने से इंसान लापरवाही से बचेगा और गुलामी की तरफ उसका लगाव बढ़ेगा और गलत कामों से नफरत पैदा होगी। इसलिए अल्लाह हम सब को हमारी जिंदगी के हर दिन नेक रास्ते पर रखे। (आमीन)

76. लालच की कोई सीमा नहीं
होती

"भाइयों, देखो यह एक ऐसी दुनिया है जहाँ जीवों की कोई कमी नहीं है और लालच की कोई सीमा नहीं है," उन्होंने छात्रों से कहा। अगर दुनिया में बहुतायत है, तो कमी भी है। तो, मोमिन (आस्थावान) का कार्य क्या है? अल्लाह और उसके नबी की आज्ञाकारिता की आवश्यकता है, साथ ही आज्ञाओं के अनुसार व्यवहार करना, नमाज़ अदा करना और अल्लाह से दुआ करना। अल्लाह आपको जिस भी स्थिति में रखे, आप संतोष, शांति और आराम से रह सकते हैं; अन्यथा, कभी शांति नहीं होगी। यह लापरवाही की जगह है, और आपके साथ कुछ भी नहीं आता है। इसलिए अल्लाह पर्याप्त है, और हमें अच्छी चीजों की आवश्यकता है।

77.कल्याण का मार्ग

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि, "अल्लाह हमें हर हालत में पैगम्बर के दान के लिए मार्गदर्शन प्रदान करे, ताकि हम अपना जीवन अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञाकारिता में व्यतीत करें, तथा हमें जीवन के अंत तक मार्गदर्शन के मार्ग पर बनाए रखें।" ध्यान रखें कि इसी में भलाई है, तथा इसके अलावा कल्याण का कोई दूसरा रास्ता या स्रोत नहीं है। अल्लाह हमें लापरवाही से बचाए। (आमीन)

78. पैगम्बर का वाणिज्य और आदेश

"आपका पोस्टकार्ड मुझे मिल गया है," उन्होंने छात्रों को बताया। और मुझे पता चला कि आपने अपनी खुद की दुकान खोल ली है। लेकिन याद रखें कि अगर आप सच्चाई और ईमानदारी से काम करेंगे, हर समय पाप से बचेंगे और अपने वादे नियमित रूप से निभाएंगे, तो अल्लाह आपको भरपूर आशीर्वाद देगा। और बहुत तरक्की होगी। इसलिए अल्लाह हमें लापरवाही से दूर रखे और हमें अच्छा बनाए रखे। (आमीन)

79. ब्याज के बारे में आदेश

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "आज आपका पोस्टकार्ड मुझे मिला है, और मैं आपको जवाब लिख रहा हूँ।" ब्याज लेने के बारे में, यह अवैध है। भले ही आप इसे अपने लिए या दान के लिए उपयोग करें। लेकिन ब्याज अवैध है। और जो इसे लेता है वह पापी होगा। बैंक में, खाते में ब्याज के बिना राशि रखी जा सकती है, और रैन बाज़ार में, शिष्यों ने बैंक खाते में ब्याज से मुक्त राशि रखी है, और यह आपकी जानकारी के लिए है।

80. सुख-सुविधा और परेशानियों की
हलचल

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "आज तुम्हारा पोस्टकार्ड मुझे मिला, और इसे पढ़ते ही मेरे दिल से दुआ निकली कि अल्लाह तुम्हारी मदद करे और तुम्हारी परेशानियों को दूर करे।" (आमीन) आराम के दिन कुछ हरकतों में बीत जाते हैं। इसलिए अल्लाह तुम्हें सब्र दे और तुम्हारी मदद करे। (आमीन)

81. बिना परेशानी के अपने गंतव्य तक पहुंचना संभव नहीं है।

उन्होंने छात्रों को चेतावनी दी कि "यात्रा के दौरान परेशानियाँ होंगी, और बिना परेशानी के यात्रा पूरी करना और गंतव्य तक पहुँचना संभव नहीं है।" और यात्रा के इरादे से,

परेशानी के लिए तैयार रहो, जो कि अनिवार्य है; और जो परेशानी के लिए तैयार है वह अपने गंतव्य पर पहुंच जाएगा। अल्लाह हम सभी को ऐसा मार्गदर्शन प्रदान करे। (आमीन)

जो कठिनाइयों को यात्रा का आवश्यक हिस्सा समझता है
इस प्रकार यात्री को आलस्य से बचने से लाभ होगा। (इकबाल)

82.यह मोमिन व्यक्ति कौन है?

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "मोमिन" (आस्तिक) वह व्यक्ति है जो 24 घंटे अल्लाह पर विश्वास रखता है और अगर वह विश्वास नहीं रखता है, तो उसका ईमान कमज़ोर है। हमें अस्थायी और नश्वर व्यक्तित्वों पर विश्वास नहीं है। लेकिन हमें हमेशा जीवित रहने वाले और अल्लाह के शाश्वत व्यक्तित्व पर विश्वास रखना चाहिए। क्योंकि जो कुछ भी और हर काम होगा वह अल्लाह के आदेश से होगा; अन्यथा, कोई भी अन्य व्यक्तित्व तब तक कुछ नहीं कर सकता जब तक कि अल्लाह कोई और आदेश न दे। अल्लाह महान है, और नबी की सदका के लिए, हमें संतोष के साथ रहना चाहिए, और हमें हमेशा अल्लाह पर भरोसा रखना चाहिए।

83. संसार में सुख-दुख दोनों रहेंगे ।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "हमें दुनिया में सुख-सुविधा और परेशानी दोनों का सामना करना पड़ता है और हर परिस्थिति में हमें अल्लाह का दास बनना पड़ता है।" ईश्वर की इच्छा के आगे समर्पण करने वाला कार्य उच्च कोटि का है। अल्लाह हमें ऐसे कार्यों और गुणों के लिए तैयार करे और हमें दोनों दुनिया में खुशियों के योग्य बनाए। (आमीन)

84. पैगम्बर के आदेशानुसार नौकरी की तलाश।

उन्होंने छात्रों से कहा, "अब मुझे विदेश से बहुत से लोगों के पत्र मिल रहे हैं, जिनमें सुनने में आया है कि वहां बहुत सी परेशानियां हैं।" ओपन वीजा धारकों को बहुत परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। यह भी बताया गया है कि ओपन वीजा धारकों को बहुत कम वेतन दिया जाता है। बिना कौशल वाले लोगों को परेशानी के अलावा कुछ नहीं मिलेगा, जबकि पेशेवर लोग अच्छी स्थिति में होंगे। इसलिए अल्लाह से दुआ करने के अलावा और कुछ नहीं करना है। अल्लाह हम सबका ख्याल रखे। (आमीन)

85. अल्लाह ने अच्छी हालत कायम की है।

"भाई, यह दुनिया है, और एक व्यक्ति की स्थिति प्रकृति द्वारा निर्धारित की जाएगी।" "इसलिए उसे इसमें धैर्य और दृढ़ता के साथ रहना चाहिए; इसलिए यह सफलता है, और यह आपके लक्ष्य को प्राप्त करने का संकेत है," उन्होंने छात्रों को सलाह दी। जो लोग मुसीबत के समय अल्लाह और उसके पैगंबर के आज्ञाकारी हैं, वे दूसरी दुनिया में अल्लाह की कृपा के पात्र होंगे, जो निर्विवाद रूप से सही है। अल्लाह हमें धैर्य और दृढ़ रहने की बुद्धि प्रदान करे। (आमीन)। मुसीबत का नतीजा आराम है, और आराम का नतीजा परेशानी है। अल्लाह हमें लापरवाही और गुमराही से बचाए। (आमीन)

86. साधनों को बढ़ाने का अर्थ जीवन नहीं कहा गया है।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी, "अल्लाह हम सबको हर हालत में शुक्रगुज़ार, धैर्यवान और मार्गदर्शन पर दृढ़ बनाए रखे (आमीन), और इसी में हमारी भलाई है।" वास्तव में, जो व्यक्ति मार्गदर्शन के मार्ग पर धैर्य और निरंतरता के साथ चलता है, वह सफल होता है, और उसका जीवन अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने पर

केंद्रित होता है। स्रोतों की संख्या बढ़ाना और आश्चर्यचकित करना लक्ष्य नहीं है। बल्कि जीवन अल्लाह और उसके नबी की आज्ञा का पालन करना और संतुष्ट रहना है। जो लोग संतुष्ट हो गए हैं, वे निस्संदेह भाग्यशाली हैं। माला की सफलता उनके सिर पर होगी। अल्लाह हम सभी को ऐसी लापरवाही से दूर रहने का मार्गदर्शन करे। (आमीन)

87. परीक्षा के बाद प्रगति होगी।

उन्होंने शिष्य को सलाह दी कि "ध्यान रहे कि हमें दिन-रात गुनाहों से दूर रहना चाहिए और नेक कामों पर अमल करना चाहिए, फिर हम सभी के लिए किसी भी मामले में कोई दोष नहीं होगा, जो हमारी परीक्षा होगी और इसके बाद हमारी महानता और कल्याण में वृद्धि होगी।" हालाँकि, हमें मार्गदर्शन के मार्ग पर बने रहने के लिए धैर्य और अल्लाह पर भरोसा रखना चाहिए। और अल्लाह के व्यक्तित्व से कभी निराश नहीं होना चाहिए। अल्लाह की निराशा हमें कुफ़्र की स्थिति में ले जाती है। इसलिए अल्लाह हमें समस्याओं और कठिनाइयों से दूर रखे और हमें दोनों दुनिया में सफल और संतुष्ट बनाए। (आमीन)

88. नबी की नेमतें और दयालुता

उन्होंने विद्यार्थियों से कहा, "11 जून को मुझे शुगर की बीमारी हुई थी और अल्लाह के करम से मेरी सेहत अच्छी है।" और चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि इलाज चल रहा है। सब ठीक है। अगर कोई मिले तो कृपया उसे बताएं। इसलिए इंसान पर आने वाली हर मुसीबत नेमत है। बेशक यह रहमत है। मुसीबत में ही अल्लाह को याद किया जाएगा। और वह दुनिया से मुंह फेर लेगा। और यह अल्लाह की तरफ से होगा। और मुसीबत गुलामी की जड़ है। अल्लाह के महान पवित्र व्यक्ति मुसीबतों के माध्यम से अपने पदों पर पहुंचे। नेक काम और अल्लाह की रहमत है। इसलिए अल्लाह, हम सभी को हर परिस्थिति में लापरवाही और गुमराही से दूर रखें और हमें हमेशा गुलामी, शुक्रिया और धैर्य में रखें (आमीन)।

89. झोपड़ी में धैर्य और संतोष के साथ रहना महल में रहने के समान है।

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "झोपड़ी में शिफ्ट होने के बारे में पता चला।" अल्लाह आपको बधाई दे। (आमीन) अल्लाह हम सबकी मदद करे। इसलिए संतोष, धैर्य और कृतज्ञता के साथ झोपड़ी में रहना महल में रहने जैसा है। अल्लाह आपको इसके लिए पुरस्कृत करे। (आमीन)

और अल्लाह इस मामले में मदद और रहमत अता फरमाए (आमीन) बेशक अल्लाह मदद जरूर करेगा। लेकिन वह हमारी भलाई को ध्यान में रखकर ही मदद करेगा। बुरी बातें सोचना भी बुरा है। गरीबी अल्लाह की याद का सबसे अच्छा जरिया है। अमीरी की हालत में अल्लाह की गुलामी से परेशानी होती है। अल्लाह हम सबको आखिर तक खुश रखे। (आमीन)

90. यहां ऊंचाई कम है।

उन्होंने छात्रों को सलाह देते हुए कहा, "तस्लीम की कविता याद करो, जिसमें वह कहता है कि यहाँ ऊँचाई है और नीचे है।" परलोक का विपरीत संसार है। संसार परलोक का विपरीत है। इस संसार की कठिनाई दूसरी दुनिया का आराम है। और दूसरी दुनिया की कठिनाई इस संसार का आराम है। कठिनाई में आराम छिपा है। अच्छे कर्म हमेशा मीठे परिणाम देते हैं। इसलिए मैंने जो कहा वह यह है कि यह एक परीक्षा है, और इसका परिणाम सफलता है।

91. संदेह और निलंबन भी मुद्दे हैं।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "इंसान को बीमारी तो आएगी ही, इसलिए हमें दवा

लेनी चाहिए और इलाज के साथ-साथ दुआ भी करनी चाहिए, जो कि ज़रूरी है।" लेकिन अगर आपमें संदेह और संशय नहीं है, और अगर आप संदेह और संशय में उलझे हुए हैं, तो आप विनाश के मुहाने पर खड़े हैं, और इसके साथ ही बहुत सी मुश्किलें भी हैं। और इसी वजह से कई घर बर्बाद हो गए। मोमिन के लिए हर चीज़ अल्लाह और उसके कामों पर ईमान लाना। संदेह और संशय और भी ज़्यादा परेशानी वाली बात है क्योंकि संदेह सिर्फ़ शैतान की तरफ़ से है। पवित्र लोगों का एक कथन है: "अल्लाह लोगों के साथ उनकी सोच के हिसाब से होता है।" जो कि बिलकुल सही है। अल्लाह रहम करे (आमीन)! हम ऐसी सोच से दूर रहें? (आमीन) दवा लेना पैगंबर की सुन्नत के मुताबिक है। इलाज और दुआ दोनों की ज़रूरत है।

92. प्रकृति का निर्णय दास व्यक्ति के पक्ष में होता है।

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "याद रखें कि जो कुछ भी है, उसका स्वाभाविक निर्णय गुलाम के पक्ष में ही होगा।" यह पता नहीं है कि इस मामले में देरी का क्या फायदा है। इसलिए अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञाकारिता में गुलाम व्यक्ति के लिए हर चीज में अच्छाई है क्योंकि हम प्रकृति का हिस्सा हैं। जो लोग आज्ञा का पालन करते हैं,

वे निस्संदेह भाग्यशाली हैं। अल्लाह हम सभी को सही रास्ते पर रखे। (आमीन)

93. इलाज का तरीका सुन्नत और हिकमत के मुताबिक है।

उन्होंने छात्रों से कहा, "चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि अल्लाह जो भी करेगा, उसका नतीजा ज़रूर मिलेगा।" यह सब कुदरत का खेल है। लेकिन इलाज की ज़रूरत है अपनी क्षमता के अनुसार, अपनी बुद्धि के अनुसार और पैगंबर की सुन्नत के अनुसार। और अल्लाह का काम है सेहत को बहाल करना। अल्लाह का काम हर उस दवा में मौजूद है जिसका हम इस्तेमाल करते हैं और चिंता करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि अल्लाह ही सेहत को ठीक करने वाला है। अल्लाह आपको सेहत और सेहत प्रदान करे। (आमीन)

94.यदि हम पैदा हुए हैं, तो हमें मरना भी अनिवार्य है।

उन्होंने छात्रों से कहा कि "यदि हम पैदा हुए हैं, तो हमें मरना भी होगा, और यदि मृत्यु अनिवार्य है, तो परलोक के लिए भी प्रावधान अनिवार्य होगा।" अतः संसार के साथ अपने व्यवहार में हमें स्वयं को स्थायी रूप से गुलाम समझना चाहिए; अल्लाह हमारी सहायता करे (आमीन)।

95. विषय-वस्तु सुखदायक होगी।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "अल्लाह तुम्हें चिंताओं और आश्चर्यों से मुक्त करे।" और तुम्हें एक शांतिपूर्ण जीवन का सुख प्रदान करे (आमीन); एक शांतिपूर्ण जीवन का उच्चतम स्रोत संतोष और अल्लाह पर पूर्ण भरोसा और विश्वास के अलावा और कुछ नहीं है। इसलिए अल्लाह हमें ऐसी खूबियाँ प्रदान करे। (आमीन)। जो व्यक्ति संयम, धैर्य और दृढ़ता पर कायम रहेगा ताकि उसकी प्रशंसा और स्थिति अधिक और सोच और विचार से परे हो। अल्लाह दया करे। (आमीन)

96. यह ऐसा ही रहेगा और मेरे जीवन के अंत तक ऐसा ही रहेगा।

"भाई, मैं तुम्हें एक रास्ता बताता हूँ। इस रास्ते पर तुम चलते रहो। याद रखो कि तुम्हें इस रास्ते पर तेज़ नहीं दौड़ना है, थकना नहीं है, या परेशान नहीं होना है," उन्होंने छात्रों को सलाह दी। लेकिन धीरे-धीरे दौड़ो और मंज़िल तक तेज़ चलते रहो, और इसी में सफलता है। और ऐसा हमारे जीवन के अंत तक होता रहेगा। ऐसा नहीं है भाई, कुछ दिन पैदल चलो और फिर चीज़ मिल जाने के बाद चुपचाप बैठ जाओ। लेकिन हमें अपना जीवन अल्लाह की याद में जीना चाहिए और हमें नबी का अनुसरण करना चाहिए, जिस रास्ते पर हम सफलता पाते हैं।

संक्षेप में, एक छोटी सी सगाई और फिर चले जाना, और यह सलाह सिर्फ़ तुम्हारे लिए नहीं, बल्कि सभी शिष्यों के लिए है। अल्लाह, नबी की सदका के लिए हमें अपने मार्ग पर धैर्य और दृढ़ता बनाए रखे। (आमीन)

97. संसार की खुशी और चिंता क्षणभंगुर हैं।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "यह दुनिया अस्थायी और नश्वर है, और दुनिया की खुशी और चिंता भी अस्थायी है।" इसलिए, इस मामले में, हमें आदेशों के अनुसार कार्य करना चाहिए। और जो कुछ भी प्रकृति प्रदान करती है, उससे संतुष्ट रहना चाहिए। और कोई अन्य विकल्प नहीं है। इसलिए, हमें जो कुछ भी मिलता है, जिसके लिए हमें आभारी होना चाहिए और समय बिताने के लिए धैर्य रखना चाहिए, ऐसे व्यक्ति की स्थिति दोनों दुनिया में बेहतर होगी। इसलिए अल्लाह धैर्य और धन्यवाद के लिए दिव्य सहायता प्रदान करे। और हमें लापरवाही और गुमराही से दूर रखें। (आमीन)

98. रिश्तेदारों के बीच विवाह प्रस्तावों की व्यवस्था बहुत अच्छी है।

उन्होंने छात्रों को सलाह दी, "मुझे आपका पोस्टकार्ड मिला है और मैं सभी विवरण जानने में सक्षम हूं। आपने लिखा है कि शादी का प्रस्ताव अच्छा है। और वर्तमान समय में, बाहरी विवाह प्रस्ताव पूरी तरह से गलत हैं। अगर हमारे बीच अच्छे व्यवहार हैं, तो ऐसे प्रस्ताव बहुत अच्छे हैं और हम आपको बधाई देते हैं। अल्लाह दोनों परिवारों को प्यार, स्नेह और सम्मान प्रदान करे।

99.उन्नति और पतन के कारण

उन्होंने विद्यार्थियों को चेतावनी दी कि " जो कोई भी आदेश के अनुसार कार्य करके आगे बढ़ता है, और जब आदेश के विरुद्ध कार्य होता है, तो वह उसके पतन की शुरुआत है," अतः अल्लाह हम सभी को सभी परिस्थितियों और सभी मामलों में आदेश के अनुसार कार्य करने और अपने जीवन के अंत तक उसी स्थिति में बने रहने के लिए मार्गदर्शन और सुरक्षा प्रदान करता है। (आमीन)

100. चाहे वह आपके लिए अच्छा हो या बुरा

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "जो व्यक्ति आदेशों की रोशनी में व्यापार करेगा, वह हर समस्या से सुरक्षित रहेगा।" उसे शांति और संतुष्टि मिलेगी। अल्लाह आपको सही और उचित तरीके से हिसाब रखने की हिदायत दे। (आमीन) और ये सब करना हमारे लिए अच्छा है, दूसरों के लिए नहीं। अगर हमारे कर्म नेक हैं, तो हम जो भी करेंगे, उसमें खुशी और कृपा होगी, साथ ही सफलता भी मिलेगी। अल्लाह हम पर रहम करे। (आमीन)

101. अल्लाह के प्रिय लोग कौन हैं?

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "जो लोग अल्लाह और उसके नबी के आदेशों का पालन करते हैं, वे अल्लाह के प्रिय लोग हैं।" और अल्लाह उन्हें संतुष्टि और शांति प्रदान करेगा। दुनिया की दौलत और संसाधन, जो क्षणभंगुर हैं, और शांति और संतुष्टि, जो महान हैं, वे भी महान धन हैं। लेकिन अल्लाह की रहमत भी है, जो केवल आज्ञाकारी बंदों को ही मिल सकती है। अल्लाह हम सभी को अच्छा रखे। अल्लाह, जो ठीक से रोज़ी प्रदान करता है, वह रोज़ी के लिए जिम्मेदार है। क्योंकि अल्लाह रोज़ी प्रदान करने वाला है, वह हमें प्रदान कर सकता है। वह

निस्संदेह हमें प्रदान करेगा। बाकी सब ठीक है।

102. समृद्धि वस्तुओं और धन का विषय नहीं है।

उन्होंने छात्रों को शुभकामनाएँ देते हुए कहा, "अल्लाह हम सभी को अपने आदेशों का पालन करने के लिए मार्गदर्शन करे और हमें दोनों दुनिया में एक समृद्ध और सफल जीवन प्रदान करे।" "समृद्ध" जीवन का अर्थ धन और संसाधनों में वृद्धि नहीं है, बल्कि शांति और आराम है। अगर शांति और आराम नहीं है, तो कई लाख डॉलर की संपत्ति और संसाधन बेकार हैं। अल्लाह हम सभी को अच्छी सेहत प्रदान करे। (आमीन)

103. सम्मान की रोटी और मिर्च अपमान की मिठाई से बेहतर है ।

उन्होंने छात्रों को सलाह दी, "अल्लाह हमें जीवन के अंत तक पापों से सुरक्षित रखे और व्यवहार में मार्गदर्शन प्रदान करे।" (आमीन)

यह काम हमारी भलाई के लिए होगा। यहीं हमारी सफलता निहित है। रोटी और मिर्च जैसे सम्मानजनक खाद्य पदार्थ अपमानजनक मिठाइयों से बेहतर हैं। इसलिए अल्लाह हमें नेक इरादे से जीने में मदद करता है और दोनों दुनिया में सफलता के लिए मार्गदर्शन देता है। (आमीन)

104. सभी परिस्थितियों में धन्यवाद और आज्ञाकारिता से जीवन जीना

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "हमेशा आदेशों की रोशनी में व्यवहार करो।" और जो भी परिणाम हो, उसे ईश्वर की इच्छा पर छोड़ देना चाहिए। (आमीन)। जो कुछ भी अल्लाह की इच्छा के अनुसार होता है, वह दासों के लिए लाभदायक होता है। परिणामस्वरूप, दास को धन्यवाद और आज्ञाकारिता की सख्त शर्तों के तहत रहना चाहिए। और यह गुण आपको प्रसिद्धि दिलाएगा। अल्लाह हमें लापरवाही और गुमराही से दूर रखे। (आमीन)

105. सामग्री उत्कृष्ट गुणवत्ता की है।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी: "वास्तविकता को समझना, दिन-रात पापों से दूर रहना, नमाज़ पढ़ना, अल्लाह से दुआ करना और आदेशों की रोशनी में व्यवहार करना, और जो मिलेगा वह खाना-पीना होगा, लालच को पीछे छोड़ना होगा, और संतोष अच्छा होना चाहिए।" संतोष के कारण ही कई पवित्र लोग उच्च पदों पर पहुँचे हैं। अल्लाह हमें लापरवाही और बुरे मार्गदर्शन से दूर रखे। (आमीन)

106.आदेशों का पालन करना और उनके परिणाम के लिए प्रार्थना करना

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी, "देखो भाईयों, हमें अपना काम हुक्म की रोशनी में करना है और उसका नतीजा अल्लाह के हाथ में है।" इसलिए हर काम के लिए हुक्म के मुताबिक नतीजे की दुआ करने का हुक्म है। अगर किसी ने हुक्म का पालन किया और मनचाहा नतीजा पाने के लिए दुआ की, तो इसमें कोई शक नहीं कि उसे उसके फर्ज से दूर रखा गया है। अब अल्लाह जो चाहे कर सकता है। अल्लाह हम सबको सलामत रखे। (आमीन)

107. संसार क्रिया का स्थान है।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि, "संसार की स्थिति परीक्षा की जगह है, और यहाँ वह व्यक्ति है जो अच्छे कर्म करता है, और ऐसा व्यक्ति अपने लक्ष्यों में सफल होगा और साथ ही परलोक में भी सुखी रहेगा।" परिणामस्वरूप, अल्लाह ऐसे कार्यों के लिए मार्गदर्शन प्रदान करेगा। (आमीन)

108. संसार स्वयं ही समस्याओं का स्रोत है ।

उन्होंने छात्रों को सलाह दी, "अल्लाह हमें हर परिस्थिति में धैर्य और कृतज्ञता प्रदान करे।" और अपने जीवन के अंत तक सही दिशा में चलते रहें (आमीन)। दुनिया ही समस्याओं का स्रोत है। इससे दूर रहने के लिए, व्यक्ति को आदेशों का पालन करना चाहिए। जिसने अल्लाह और

उसके नबी के आदेशों का पालन किया, वह सुरक्षित है, और वह ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करेगा। और जो अल्लाह के करीब आता है। इसलिए अल्लाह इस रास्ते को न छोड़ने का मार्गदर्शन दे। (आमीन)

109. गुलामी का स्वास्थ्य और शौक

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "आपके पोस्टकार्ड मुझे नियमित रूप से मिल रहे हैं और इससे मुझे खुशी हो रही है क्योंकि यह अल्लाह और उसके पैगम्बर के प्रति आपके प्रेम का सबूत है।" इसलिए अल्लाह हम सभी को स्वस्थ और तंदुरुस्त रखे और इसी स्वास्थ्य में उसने हमें गुलामी का शौक दिया है, ताकि हम दोनों दुनिया में कामयाब हो सकें।

110.आत्मा को जानने के लिए प्रतिज्ञा करना आवश्यक है।

"आपने लिखा है कि आत्मा और उसकी पवित्रता को जानने में ईश्वरीय सहायता प्राप्त करने के साथ-साथ आत्मा को जानना भी आवश्यक है, जिसे किसी संगति में गए बिना नहीं जाना जा सकता," उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी। आत्मा को समझने के लिए एक चीज की आवश्यकता है और यह

मार्गदर्शक की जुबान से ही जानी जाएगी। अल्लाह हम सब पर रहम करे। (आमीन)

111.विश्वास बढ़ाने के तरीके

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "पवित्र लोगों की संगति करने और पवित्र लोगों की स्थिति पढ़ने से ईमान में वृद्धि होगी।" और इसके बिना ईमान बढ़ाना मुश्किल है। इसलिए आप 'तदकिर्तल औलिया' नामक पुस्तक में पवित्र लोगों की जीवनी के बारे में पढ़ें। अगर आप पढ़ना जानते हैं, तो पुस्तक पढ़ें। पुस्तक का कुछ अंश रोजाना सुनना या पढ़ना जरूरी है।

कहावत के अनुसार, "विश्वास प्राप्त करने के लिए, पवित्र लोगों के शेड के नीचे चलो।"

अतः अल्लाह हम पर दया करे। (आमीन)

112. वास्तविकता जानने से विश्वास बढ़ेगा.

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "अल्लाह पर कम और संसाधनों पर अधिक विश्वास करने से बेचैनी और परेशानी होती है, और जब अल्लाह पर

विश्वास बढ़ेगा, तो बेचैनी और परेशानी में कमी आएगी।" अब विश्वास में वृद्धि हो रही है जो सत्य को जानने पर निर्भर है।

तो जहाँ तक मेरा ईमान है, वहाँ तक आसानी और सुकून होगा। अल्लाह के बंदों की घटनाओं के बारे में पढ़ने से आशंकाएँ कम होंगी और ईमान बढ़ेगा। तो अल्लाह हम सबको लापरवाही और गुमराही से बचाए। (आमीन)

113.दोनों दुनिया में सफलता के स्रोत.

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी, "जीवन में समृद्धि और सफलता, साथ ही दोनों लोकों में सफलता, यदि कोई स्रोत है, तो वह अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञाकारिता में है।" इसका तात्पर्य हर समय पापों से दूर रहना और अपने जीवन को अल्लाह और उसके पैगम्बर को समर्पित करना है। इसलिए, निस्संदेह अल्लाह उसे समृद्ध बन्दा बनाता है और उसके लिए लक्ष्य निर्धारित करता है; निस्संदेह, उसका जीवन सफल होगा, और वह अपनी गुलामी में लापरवाह नहीं होगा। अल्लाह हम सभी को स्वस्थ रखे। (आमीन)

114.परलोक के लिए अच्छा कर्म करना

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "हर परिस्थिति में शुक्रगुज़ार और इबादत करने वाले बनो और दिन-रात गुनाहों से दूर रहो, जो लोग अल्लाह की मर्ज़ी से अपनी ज़िंदगी गुज़ारेंगे, वे अच्छे होंगे।" और उनका आख़िरत अच्छा होगा। इसलिए अल्लाह हम सबको इसी रास्ते पर रखे। (आमीन)

115. यह संसार परलोक में खेती के समान है।

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि " जो लोग नेक कामों में लगे रहते हैं, वे भाग्यशाली लोग हैं" और वे दोनों दुनिया में सफल होंगे। इसलिए अल्लाह हम सभी को धैर्य और दृढ़ता के साथ इस मार्ग पर बनाए रखे। (आमीन)

116. आख़िरत का सौदा ग़ुलामी है।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "मृत्यु ने अल्लाह के पैगम्बरों और पवित्र व्यक्तियों को भी नहीं छोड़ा। हम सभी मरेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं है। संसार नश्वर है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को परलोक के कार्यों में संलग्न होना पड़ता है। इसलिए अल्लाह हम सभी को अच्छी सलाह दे। और अल्लाह हम सभी को लापरवाही और गुमराही से सुरक्षित रखे। (आमीन)

117.किसी भी कार्य में जल्दबाजी करना व्यर्थ है ।

उन्होंने छात्र को सलाह दी कि "ओह, मेरी माँ, देखो कि यह दुनिया गलत जगह है।" "जो खोजता है और सोचता है" का अर्थ है वह जो अल्लाह और उसके पैगंबर के आदेशों का पालन करेगा, और इस प्रकार सफल होगा और अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करेगा। और अगर वे बिना खोजे काम करते हैं, तो उन्हें केवल समस्याएं और आश्चर्य ही मिलेंगे। अल्लाह हमें हर खोज को धीमी गति से करने का मार्गदर्शन करे। किसी भी कार्य में जल्दबाजी करना व्यर्थ है (आमीन)।

118. हमारा वातावरण उपयुक्त नहीं है

"भाइयों, ध्यान रखें कि हमारा माहौल ठीक न हो," उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी। लापरवाही, बेशर्मी और शैतानी हरकतें हर जगह देखने को मिलती हैं। इसलिए ऐसे समय और ऐसी संगति में और ऐसे माहौल में जब तक हम कम से कम 'तजकिरत औलिया' या 'कुतुबत गौसे आज़म' की किताब न पढ़ लें या न सुन लें, तब तक कोई खुशहाली नहीं होगी। अल्लाह हम पर रहम करे। (आमीन)

119. अपने काम में लगे रहो.

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "भाइयों, यह समय किसी के बारे में जानने का नहीं है।" इसलिए तुम्हें अपने काम में लग जाना चाहिए। और अल्लाह की याद में लग जाना चाहिए। वैसे, दूसरों के साथ घूमने जाने से ज़्यादा अल्लाह के बंदों की किताबें पढ़ना ज़्यादा फ़ायदेमंद है। लेकिन ऐसे लोगों से मिलना चाहिए जो तुम्हारे जैसी सोच, धर्म और काम करते हों, उनसे अल्लाह के बंदों के बारे में चर्चा करें और किताबें पढ़ें। अल्लाह हम सब पर रहम करे। (अल्लाह)

120. संसार शैतान का भण्डार है।

उन्होंने छात्रों से कहा, "अल्लाह लापरवाही और गुमराही से बचाए (आमीन)।" क्योंकि दुनिया शैतान का भंडार है। हर कदम पर धोखे, मिथ्याचार और छल के जाल हैं। इसका मतलब है कि हर कदम पर पापों की ओर आकर्षण, पापों के बारे में सलाह और उनके बारे में आकर्षण होगा।

तो अल्लाह हम सब को गुनाहों से बचाए और अल्लाह और नबी के हुक्मों पर चलने की हिदायत दे और अगर ऐसा अमल होगा तो कामयाबी भी मिलेगी। अल्लाह हम सब पर रहम फरमाए। (आमीन)

121. अल्लाह का ज़िक्र गुनाहों से बहुत ज़्यादा हिफ़ाज़त देता है।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "पाप से सुरक्षित रहने और अल्लाह तथा उसके पैगम्बर के आदेशों के प्रकाश में अपना जीवन बिताने के लिए अल्लाह का स्मरण बहुत आवश्यक है।" समय बीतने के बारे में विलाप करना और शिकायत करना व्यर्थ है तथा अपना जीवन कृतज्ञता और धैर्य के साथ जीना चाहिए।

122. मोमिन (आस्तिक) की जीवन पद्धति

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "याद रखो कि मुसलमान का काम केवल अल्लाह की गुलामी में दिन-रात लगे रहना और अल्लाह की स्थिति में संतुष्ट रहना है।" और अल्लाह की इच्छा के प्रति समर्पित हो जाना ही मोमिन का काम है; अन्यथा, यदि तुम अन्य बातों की चिंता करोगे, तो तुम्हें चिंता और आश्चर्य के अलावा कुछ नहीं मिलेगा।

अतः सफलता और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के उच्च-स्तरीय स्रोत स्वयं दो शब्द हैं: अल्लाह और उसके पैगम्बर के आदेशों के अनुसार जीवन का संचालन करना, प्रार्थना करना और अल्लाह से प्रार्थना करना। आप प्रकृति

द्वारा प्रदान की गई परिस्थितियों में खुश रहें और अपना जीवन खुशहाल तरीके से व्यतीत करें। यही एकमात्र तरीका है जिससे एक आस्तिक और मुसलमान जीवन जी सकता है। अल्लाह हम सभी पर दया करे। (आमीन)।

123. जो अल्लाह को भूलेगा अल्लाह भी उसे भूल जायेगा।

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "हमें प्रत्येक परिस्थिति में अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञा का पालन करना चाहिए तथा अल्लाह और उसके पैगम्बर के स्मरण में कोई लापरवाही नहीं होनी चाहिए।"

सबसे बड़ा काम यह है कि दिन रात गुनाह से दूर रहा जाए और उसी के मुताबिक काम किया जाए। और गुनाह से बचने के लिए हमें अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करनी चाहिए। और हमें अल्लाह और उसके रसूल को नहीं भूलना चाहिए। और जो अल्लाह को भूल जाएगा, अल्लाह भी उसे भूल जाएगा। अल्लाह रहम करे। (आमीन)

124. साहसी कार्य

उन्होंने छात्रों से कहा, "अल्लाह अपनी दया का बदला दे।" और हमें समस्याओं और चिंताओं से दूर रखें (आमीन), खास तौर पर हमें हमारे

जीवन के अंत तक सही रास्ते पर बनाए रखें। (आमीन)। यह प्रार्थना इसलिए ज़रूरी है क्योंकि शैतान हमेशा हमें धोखा देने के लिए तैयार रहेगा । गुमराह करना क्या है? जब ऐसा समय आता है जब आप अपने पापों के बारे में सोचते हैं लेकिन उन पर अमल नहीं करते, तो वह हिम्मत का काम है। यह दुनिया का सबसे हिम्मत का काम नहीं है। सिवाय पापों को छोड़ने के और इसमें कोई शक नहीं है कि यह हिम्मत का काम है। अल्लाह हमें आत्मा के खिलाफ़ लड़ने के लिए हिम्मत दे। (आमीन)

125. सभी दोष लापरवाही से होते हैं।

"देखो भाईयों, दुनिया में बहुत सारी खामियाँ हैं," उन्होंने छात्रों को सलाह दी। इसलिए, इसमें कोई संदेह नहीं है कि जो व्यक्ति लापरवाही से जागता है, मार्गदर्शन पाता है, और वास्तविकता को जानता है, और अपने जीवन को आदेशों की रोशनी में बिताता है, वह सफल होगा और दोनों दुनिया में अपने लक्ष्य को प्राप्त करेगा। और अगर अल्लाह चाहेगा, तो उसे अल्लाह की मदद और रहमत मिलेगी। नतीजतन, हमें अपने जीवन को लापरवाही और पापों से दूर रखना चाहिए। अल्लाह नेक मार्गदर्शन के साथ मदद करे। (आमीन)

126. एक अच्छा संसार और परलोक होगा।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "वह व्यक्ति भाग्यशाली है जो अपना जीवन अल्लाह और उसके नबी के आदेशों की रोशनी में बिताता है।" इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह दुनिया और दूसरी ज़िंदगी अद्भुत होगी। अल्लाह हमें लापरवाही से दूर रखे। (आमीन)

127. गुमराही क्या है और गुलामी क्या है?

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी: "याद रखो कि इस रास्ते पर गुमराही है और गुनाहों को अपनाना गुमराही है।" गुलामी क्या है? दिन-रात गुनाहों से दूर रहना, अल्लाह का ज़िक्र करना, रहस्यों को जानना, नमाज़ अदा करना और अल्लाह से दुआ करना। जिसने इस काम से फ़ायदा उठाया है, वह बेशक किस्मतवाला है और उसकी किस्मत चमक रही है। अल्लाह इन कामों से कामयाबी दे। (आमीन)।

128.कार्य-आधारित दंड और पुरस्कार

"भाई, याद रखो कि सोचने के लिए कोई सजा या इनाम नहीं है," उन्होंने छात्रों को सलाह दी। लेकिन क्या कोई कार्रवाई है? इसलिए, अगर कई लाख नकारात्मक विचार होंगे, तो उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जानी चाहिए और सुरक्षित रहना चाहिए। हालांकि, अच्छे

विचारों के बाद कार्रवाई होनी चाहिए। विचारों का उभरना हमारे नियंत्रण से बाहर है। लेकिन हमारे पास काम करने या न करने का विकल्प है। अल्लाह हमें बुरे कामों से बचाए रखे। (आमीन)

129. शुभ कर्म और शुभ कार्य

, "दिन-रात पापों से दूर रहकर यह ध्यान रखें कि हम जो भी कार्य करें, उसमें कोई संदेह नहीं रह सकता कि वह कार्य धन्य है और उस कार्य से कल्याण होता है।" महान कार्य है पापों को दूर रखना। और यह एक शानदार उपलब्धि है।

पाप से दूर रहने के लिए बहुत प्रयास करना पड़ता है। अल्लाह हमें बचाए। (आमीन)

130. संसार एक अस्थायी और नश्वर स्थान है।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी: "यह संसार एक अस्थायी और नश्वर स्थान है, और इस स्थान पर कोई भरोसा नहीं है।" इसलिए इस स्थान के व्यवहार को आज्ञाओं के प्रकाश में किया जाना चाहिए, जो इसकी ज़रूरतों के अनुसार उचित होगा। और फिर आप परलोक और उसके बारे में जो भी व्यवहार करें, वह कम होगा, ज़्यादा नहीं।

"आख़िरत के काम" का क्या मतलब है? दिन और रात में गुनाहों से दूर रहना और अल्लाह से दुआ और दुआ करना। और हुक्मों के मुताबिक अपनी ज़िंदगी गुज़ारना। नतीज़ा यह कि अल्लाह हमें इस तरह के कामों में लापरवाही न करने की हिदायत दे। (आमीन)

131. अल्लाह की बारगाह में क़बूल किये जाने वाले काम

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी: "अतः अल्लाह हमें पापों से दूर रखने और व्यवहार में संलग्न होने के लिए मार्गदर्शन करे।" और अल्लाह से प्रार्थना और दुआएँ करते रहने में ईश्वरीय सहायता करे। जो लोग दिन-रात पापों से दूर रहते हैं और अल्लाह की याद में अपना जीवन बिताते हैं और ऐसे लोग अल्लाह की बारगाह में स्वीकार्य हैं और दोनों दुनिया में सफल होंगे। उन्हें गरीबी में रहने की कोई ज़रूरत नहीं है; वे आराम और शांति में रहते हैं। प्रगति का नाम धन और संसाधन होना नहीं है। बल्कि यह आराम और शांति की स्थिति का नाम है। अल्लाह हम सभी को लापरवाही और गुमराही से दूर रखे।

132. जो लोग गुलाम नहीं हैं उनके लिए जीवन एक समस्या है।

उन्होंने छात्रों को सलाह दी: "इस तरह दुनिया में गुलामी करना आख़िरत का सौदा है।" गुलामी भी जीवन का लक्ष्य है। इसलिए जीवन उन लोगों के लिए एक समस्या है जो गुलाम नहीं हैं। कोई ऐसा व्यक्ति है जो अपनी ज़िंदगी गुलामी में गुज़ारेगा, और वह निस्संदेह एक भाग्यशाली व्यक्ति है। इसलिए दिन और रात में पापों से दूर रहना और अल्लाह की याद में ज़िंदगी गुज़ारना गुलामी है। अल्लाह हमें गुमराही और लापरवाही से दूर रखे। (आमीन)

133. तीर्थस्थानों का दर्शन आध्यात्मिक उपकार है।

उन्होंने छात्रों को सलाह दी, "मुझे बताया गया है कि आप पर्यटक बस सेवा द्वारा अजमेर शहर की यात्रा करना चाहते हैं।" इसलिए आप अपनी पसंद के अनुसार यात्रा कर सकते हैं। आध्यात्मिक कृपा का उच्च अनुग्रह स्रोत अल्लाह के पवित्र लोगों की कब्रों का दौरा करना है। आप प्यार और बधाई के साथ आने के लिए स्वागत है (आमीन)। छात्र को सलाह के एक अन्य पत्र में कहा गया है कि आपको अपने प्यार के साथ गुलबर्गा शहर की यात्रा करने की अनुमति है। इसलिए जाओ और यात्रा करो और वापस आओ। मैंने इस साल पुण्यतिथि पर गुलबर्गा शहर जाने का इरादा किया था, लेकिन इस मामले में कुछ कारण थे कि मैं यात्रा नहीं कर सका।

स्वास्थ्य समस्या के अलावा किराए का कोई और कारण नहीं था। इसलिए अल्लाह, सब कुछ अच्छा रखें। (आमीन)

134. रमज़ान के महीने में मोमिन के आमाल

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "रमज़ान का महीना आ रहा है और यह आख़िरत में अच्छे और उच्च स्तर के व्यवहार का ज़रिया है।" गुनाहों से दूर रहना, रोज़ा रखना, अल्लाह को याद करना और इस महीने को मोमिनों के लिए बिताना, रमजान के दौरान सौभाग्य और कारण की पराकाष्ठा है। इसलिए मोमिन सबसे भाग्यशाली और किस्मतवाला व्यक्ति है क्योंकि उसने लापरवाही नहीं की और उसे फ़ायदा होगा। अल्लाह सभी को ऐसी स्थिति में लापरवाही न करने की हिदायत दे। (आमीन)

135. अल्लाह के प्रकोप का काल और काल का आदेश

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "दिन-ब-दिन हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं।" इसलिए हमें जोश के साथ काम पर लौटना चाहिए क्योंकि ऐसी हालत में काम करने की स्थिति के कारण अल्लाह और उसके नबी की आज्ञाकारिता की आवश्यकता होती है, जो अनिवार्य है और जब तक ऐसा नहीं किया जाता तब तक लोग समस्याओं से सुरक्षित नहीं रह सकते। जब गुनाहों की

संख्या बढ़ जाती है तो अल्लाह का प्रकोप भड़क उठता है। इसलिए सभी समस्याओं की जड़ केवल पाप है। इसलिए इस अवधि में समस्या का इलाज गुलामी को त्यागना और अल्लाह के आदेशों का पालन करते हुए अपना जीवन व्यतीत करना है, इसके अलावा कोई उपाय नहीं है। इसलिए दिन और रात पापों से दूर रहें, नमाज़ अदा करें और अल्लाह की शान्ति में अपना योगदान दें। तो शायद दुनिया में शांति हो और मरने के बाद अच्छी ज़िंदगी मिले। अल्लाह रहम करे। (आमीन)

136.युवा उपासना का काल बहुत विस्तृत है।

"भाइयों, याद रखो कि दिन-रात गुनाहों से बचने के लिए जवानी की इबादत बहुत बढ़िया है," उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी। और जवानी की इबादत से बेहतर कोई इबादत नहीं है, बसंत। जवानी की सबसे अच्छी ज़िंदगी क्या है और जवानी की इबादत क्या है? तो, दिन-रात गुनाहों से बचने के लिए नमाज़ अदा करो और अल्लाह से दुआ करो, और इसमें कोई शक नहीं कि जो इंसान अपनी जवानी के दौरान इस काम से गुज़रेगा, वह खुशनसीब और सौभाग्यशाली इंसान है। और अल्लाह उसकी ज़रूरतों और इच्छाओं को पूरा करेगा, जो कि ज़रूरी है। और, इससे भी अच्छी बात यह है कि कोई दूसरा काम नहीं है।

एक अन्य सलाह पत्र में उन्होंने छात्र को सलाह दी कि "युवा काल की सबसे अच्छी उपलब्धि

दिन-रात पाप से सुरक्षित रहना है।" जब आप ऐसी स्थिति में हों जहाँ आप रहस्यों को जानना चाहते हों, और विशेष रूप से जब आपके पास पुस्तकों में पवित्र लोगों की घटनाओं के बारे में पढ़ने का समय हो, तो आपको "कुतुबत ग़ौस आज़म" अवश्य पढ़ना चाहिए। ताकि वह गुमराही से दूर रहे। इसलिए अल्लाह हमें सदक़ा दे कि हम दिन-रात पापों से दूर रहें, नमाज़ पढ़ें, अल्लाह से दुआ करें, हुक्म के मुताबिक़ काम करें और रास्ते पर दृढ़ रहें। (आमीन) और युवाओं के लिए इस से बेहतर कोई दुआ नहीं है। अल्लाह इसे स्वीकार करे। (आमीन)

137.यदि आप लंबा जीवन जीते हैं, तो अंततः आप मर जायेंगे।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "दुनिया अस्थायी और नश्वर है।" यदि आप लंबे समय तक जीवित रहते हैं, तो आप मर जाएंगे और इन सभी चीजों को पीछे छोड़ने के लिए मजबूर होंगे। इसलिए, हर समय पापों से दूर रहें और व्यवहार में लगे रहें। यह हमारी सफलता के लिए आवश्यक है। यदि ऐसी समस्याएं हैं जो पापों के कारण होती हैं और जो पापों से मुक्त हो जाएगा, वह प्रशंसा का पात्र है। अल्लाह दया करे। (आमीन)

138. पापी अपने आप में शैतान है।

उन्होंने छात्रों से कहा, "सभी दोष पाप के कारणों से उत्पन्न होते हैं।" पापी अपने आप में शैतान है। इसलिए, दुनिया और परलोक में, जहाँ भी दोष और समस्याएँ हैं, वे केवल पाप और वास्तविकता को समझने में विफलता का परिणाम हैं। इसलिए जो व्यक्ति पापों से दूर रहेगा, लेन-देन में संलग्न होगा और वास्तविकता को समझेगा, वह निस्संदेह एक भाग्यशाली, सौभाग्यशाली और धर्मपरायण व्यक्ति है। अल्लाह हम सभी को जीवन भर सही रास्ते पर रखे। (आमीन)

139. साझेदारी के आधार पर व्यापारिक लेन-देन न करना

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "किसी भी साझेदारी के व्यापारिक सौदे में भाग लेना याद रखें।" यह बहुत ही लापरवाही और गलती का मौसम है, छोटे-मोटे सौदे करने चाहिए, लेकिन अपने खुद के सौदे करने चाहिए, और इस दौरान सभी लोगों की नीयत में खोट है, और हर व्यक्ति

अल्लाह और उसके नबी के आदेशों के खिलाफ़ सौदे कर रहा है। अल्लाह रहम करे। (आमीन)

140. संसार अनित्य है और परलोक शाश्वत है ।

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह सही है, और इस रास्ते को खोजना अल्लाह की कृपा के कारण है।" इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह सही है। लेकिन इस पर दृढ़ रहना, यही पूर्णता है। धैर्य और दृढ़ता सफलता और लक्ष्य प्राप्त करने की कुंजी है। धैर्य और दृढ़ता किसी भी प्रयास में सफलता के शक्तिशाली स्रोत हैं। इसलिए दिन-रात, मार्गदर्शक के बताए रास्ते पर चलते हुए पापों से दूर रहें, जो कि जरूरी है, और अपना जीवन ईश्वर के आदेशों की रोशनी में गुजारें, जो कि एक महान बात है। शर्त धैर्य और दृढ़ता है। और कोई भी मुकाम केवल दृढ़ता से ही हासिल होगा। चाहे दुनिया हो या दीन, धैर्य और दृढ़ता होनी चाहिए। लेकिन दुनिया अस्थायी है, और आखिरत हमेशा के लिए है। अल्लाह हम पर रहम करे। (आमीन)

141. वास्तविक मार्गदर्शन और वास्तविक उपदेश में क्या अंतर है?

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "असली मार्गदर्शन और असली उपदेश वह दिन और वह रात है: पापों से सुरक्षित रहना, अल्लाह की याद में लगे रहना, नमाज़ अदा करना और अल्लाह से दुआ करना।" और अल्लाह की रोज़ी में संतुष्ट रहना। पापों से बचने का ख्याल रखना। जो भीतरी है, और वह व्यक्ति बदकिस्मत है। महान कार्य हर समय पाप-मुक्त रहना है। किसी व्यक्ति की ज़ुबान से बताना आसान है, लेकिन पाप-मुक्त होना एक पूर्णता है। इसलिए अल्लाह, हम सभी को पाप से दूर रखें। (आमीन)

142.हमारे अनुबंध के अनुसार प्रतिपूर्ति की जाएगी।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि " पवित्र व्यक्तियों के बारे में यह कहा जाता है कि जो व्यक्ति युवावस्था में कार्य में संलग्न होगा, वही कार्य वृद्धावस्था में दोहराया जाएगा।" तथा जो कार्य उसे मृत्यु की पीड़ा के दौरान दिखाई देगा, वही कार्य वृद्धावस्था में दोहराया जाएगा। जो कुछ भी वह अपनी युवावस्था की पीड़ा में तथा मृत्यु के बाद देखेगा, वही उसके लिए पुनर्जीवित हो जाएगा।

इसलिए इंसान को चाहिए कि दिन रात पढ़े और अल्लाह की याद और बातों में मग्न रहे और अल्लाह के पवित्र बंदों की जीवनी पढ़ने में

मग्न रहे। और अगर उसे कोई जुनून हो जाए तो वह इसी वजह से फिर से जी उठेगा। यह बिलकुल सही है। अल्लाह ऐसे काम, याद और विचार से मना न करे। (आमीन)

143.पवित्र व्यक्तियों की पुस्तकें उनकी संगति से कम नहीं हैं।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि " पवित्र व्यक्तियों की पुस्तकें अकेलेपन में उनकी कम साथी नहीं होतीं। इसलिए पवित्र व्यक्तियों के जीवन की घटनाओं की पुस्तकें पढ़ना आवश्यक है क्योंकि इसे पढ़ने से मनुष्य में मनुष्य बनने की चाह पैदा होगी और यह उसे गुमराही से रोकेगा और उसका ईमान बढ़ाएगा। और उसमें धैर्य और साहस पैदा करेगा। और उसके लिए दुनिया से अशांति दूर करेगा और इससे हमारी गलतफहमियाँ दूर होंगी। और कुछ हद तक वास्तविकता की समझ पैदा होगी। और बेकार की चीजों से नफरत पैदा होगी। हमेशा हुक्म की रोशनी के अनुसार काम करने की क्षमता पैदा होगी। और इसके कई फायदे भी हैं।
इसलिए इस मामले में 'तदखिरतल औलिया' और 'कुतुबत गौसे आज़म' का पढ़ना ज़रूरी है। अल्लाह हम सभी को ऐसी कृपा प्रदान करे।
(आमीन)

144. गुलामी में जो स्वाद है, वह किसी और चीज में नहीं।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि मनुष्य का सम्मान और विश्वास केवल गुलामी में ही है। गुलामी में जो स्वाद है वह किसी और चीज में नहीं है। यदि तुम हजार व्यक्तियों की हालत देखो तो पाओगे कि गुलामी में ही दोनों लोकों की भलाई है। गुलामी क्या है? दिन-रात पापों से दूर रहकर और आदेशों की रोशनी में नेक काम करते रहना। और जो मिले खाओ और जो मिले पहनो। और नमाज़ और अल्लाह से दुआ करना सिवाय इसके कि हम उलटे लटके रहें तो बेकार है। और यदि कोई हवा में उड़ेगा तो वह गुमराही होगी। और वह बेकार है। अल्लाह हम सभी को लापरवाही से बचाए। (आमीन)

145. मौन में आत्मा आशंकाएं पैदा करेगी।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "अल्लाह तुम्हें शांति और जादू का समय दे, इसलिए इसे अच्छा समझो और पवित्र व्यक्तियों की घटनाओं, अल्लाह की स्तुति और दैनिक पाठ आदि का अध्ययन करो, ताकि तुम इस मामले में इस समय को आशीर्वाद समझो। यह सोचना बुरी संगति से बेहतर है और चुप्पी बेकार है। चुप्पी में आत्मा आशंकाएँ पैदा करेगी और हमें चिंतित करेगी और अध्ययन अल्लाह के पवित्र व्यक्तियों की संगति के बराबर है। और इबादत

से कम नहीं। अल्लाह अच्छा मार्गदर्शन दे। (आमीन)

146. पाप लोभ के कारण हैं

उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि "अल्लाह हमें लालच से दूर रखे ताकि हम पापों में लिप्त न हो सकें। (आमीन)। लोग पैसे के लालच में जो चाहें कर रहे हैं, इसलिए अल्लाह ऐसे कामों से दूर रखे (आमीन) और अल्लाह उनकी बहुत मदद करे और अल्लाह के पास जो कम है, वह पूरा करे और यह सही है।"

147. दृढ़ विश्वास हो तो सफलता अवश्य मिलती है

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि "सभी विवरण ज्ञात हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है कि हे धैर्य के गुलाम, आपका काम हो गया है। लेकिन कुछ समय बाद ऐसा होगा, यह बिल्कुल सही है। लेकिन हमें विश्वास नहीं है। यह आपकी स्थिति नहीं है, बल्कि मेरी भी यही स्थिति है।

अगर पक्का ईमान हो तो कामयाबी मिलती है। लेकिन ईमान का पूरा होना कोई साधारण बात

नहीं है। यह कई सालों की मेहनत के बाद संभव होगा। अल्लाह हमारे मकसद को पूरा करे। (आमीन)

148. दवा बनाना डॉक्टर का काम है

उन्होंने छात्रों को सलाह दी, "भाई, अल्लाह और पैगम्बर की रहमत से निराश मत हो। बल्कि अपनी क्षमता के अनुसार इलाज का प्रबंध करो जो अल्लाह के पैगम्बर की सुन्नत के अनुसार हो। और इसके बाद अल्लाह पर पूरी उम्मीद रखो। इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह के हाथ में इलाज का तरीका है।

दवा बनाना तो डॉक्टर का ही काम है। लेकिन इस मामले में इलाज अल्लाह के हाथ में है। इसलिए इस मामले में निराश होने की कोई ज़रूरत नहीं है, चाहे दो पैसे की दवा हो लेकिन हमें उसका इस्तेमाल करना ही है। क्योंकि इलाज अल्लाह के हाथ में है। नमाज़ में हाज़िर होकर दुआ करें, इसलिए इसमें हमारे लिए इलाज मौजूद होगा।

149. अल्लाह के पवित्र लोगों की संगति बहुत बड़ी चीज़ है

उन्होंने छात्रों को सलाह दी, "अल्लाह हमें जीवन के अंत तक सीधे रास्ते पर रखे। (आमीन)। यह अच्छी बात है कि अल्लाह के पवित्र लोगों की संगति बहुत बड़ी बात है और जो लोग बहुत संगति करते हैं, वे बहुत लाभान्वित होते हैं। और वे आशंकाओं और आश्चर्यों से मुक्ति पा लेते हैं। लेकिन संगति से बाहर निकलना बहुत मुश्किल है। अल्लाह हम सभी पर दया करे। (आमीन)।

150. नेक औलाद अल्लाह की बड़ी फ़ज़ल है।

उन्होंने छात्र को सलाह दी, "यह आपकी अच्छी किस्मत है कि अब तक आपके बच्चे अच्छे आचरण वाले हैं और यह आपकी अच्छी नीयत के कारण है और यह आपके अच्छे कर्मों का परिणाम है और यह अल्लाह की कृपा और कृपा है। नेक बच्चे अल्लाह की बड़ी कृपा हैं और यह सौभाग्य की निशानी है।
जहाँ तक सम्भव हो सके, जो भी हो, जितनी भी हो, गुलामी और स्मृति हो, उसमें हमें लगे रहना चाहिए और इस मामले में खाली नहीं रहना चाहिए और इसी में हमारे लिए भलाई है।

अंत.